* 20th Year
* Issue: 107
* 17.08.2026 (MONDAY)
* ROURKELA
* R.N.I. No. ORIHIN/2006/18978
* (Pages-6)
* Price:2.00

e-paper-www.thekalingasamachar.com

दैनिक
कलिंग समाचार
The kalingasamachar

प्रकाशक एवं संपादक : प्रकाश कुमार धल

Published From ODISHA, JHARKHAND & CHHATTISHGARH

स्वतंत्रता दिवस पर बोले पीएम मोदी-दिमागी नक्सलियों को पहचानें, उन्हें अलग करें, ये समाज को भटका रहे

नयी दिल्ली १६/०८ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि हथियारबंद नज़्सलवाद पर काबू पा लिया गया है, लेकिन उन्होंने चेतावनी दी कि माओवादी सोच वाले लोग अभी भी देश के अलग-अलग हिस्सों में मौजूद हैं और उन्हें पहचानकर अलग-थलग करने की ज़्रूरत है। लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित करते हुए, पीएम मोदी ने कहा कि देश ने हथियारबंद नज़्सलवाद को सफलतापूर्वक कमज़्ोर किया है, लेकिन उन्हें दिमागी नज़्सलियों से सावधान रहने की ज़्रूरत है। पीएम मोदी ने कहा हमें इन दिमागी नज़्सलियों की पहचान करनी होगी, उन्हें अलग-थलग करना होगा और एक विकसित देश के लिए युवाओं को एकजुट करना होगा।

पीएम मोदी ने कहा कि नज़्सलवाद और माओवाद ने युवाओं की उज़्मीदों को खत्म कर दिया है और दशकों तक देश के बड़े हिस्सों को हिंसा की चपेट में रखा है। उन्होंने उग्रवाद से लड़ते हुए अपनी जान गंवाने वाले सुरक्षाकर्मियों को भी श्रद्धांजलि दी। पीएम मोदी ने कहा नज़्सलवाद और माओवाद ने लाखों युवाओं के सपने बर्बाद कर दिए। इसने कई माताओं से उनके बेटे छीन लिए और कई माताओं के सपने कुचल दिए। इस नज़्सलवाद ने बंदूक के दम पर चार दशकों तक भारत के एक बड़े हिस्से और वहां की आबादी को बंधक बनाकर रखा था; उन्होंने संविधान को भी नष्ट कर दिया था। उन्होंने कहा कि नागरिकों को नज़्सली हिंसा से बचाने के दौरान 3,500 से ज़्यादा सुरक्षाकर्मी मारे गए।

देश के लोगों की सुरक्षा करते हुए 3,500 से ज़्यादा सुरक्षाकर्मी शहीद हुए। युद्ध में मारे गए सैनिकों की तुलना में ज़्यादा पुलिसकर्मी मारे गए; लोगों को सुरक्षा देने के लिए पुलिसकर्मियों को अपनी जान जोखिम में डालनी पड़ी। इस नज़्सलवाद ने देश को खून से सराबोर कर दिया था। प्रधानमंत्री ने कहा, 2014 में जब आपने हमें मौका दिया, तो हमने तय किया कि हम देश को नज़्सलवाद से मुक्त करेंगे, और आज मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि नज़्सलवाद में अब सांस लेने की भी ताकत नहीं बची है।

पीएम मोदी ने हथियारबंद नज़्सलियों और उन लोगों के बीच अंतर बताया जिन्हें उन्होंने दिमागी नज़्सल कहा। उन्होंने आरोप लगाया कि ये लोग हिंसा को बढ़ावा देने और देश को गलत दिशा में ले जाने के मौके तलाशते रहते हैं।

पीएम मोदी ने कहा, सालों तक सार्वजनिक जीवन में माओवादी सोच वाले लोग मौजूद रहे; सरकारी समितियों में भी इस सोच ने कई संस्थानों और पहलों को प्रभावित किया। मेरे प्यारे देशवासियों, हम %हथियारबंद नज़्सलियों% पर काबू पाने और देश को उनसे मुक्त कराने में सफल रहे हैं। भले ही ये नज़्सली खत्म हो गए हों, लेकिन %दिमागी नज़्सली% (नज़्सली सोच वाले लोग) मौके की तलाश में हैं, हिंसा के तरीके ढूंढ रहे हैं और देश को गलत रास्ते पर ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। हमें इन दिमागी नज़्सलियों की पहचान करनी होगी, उन्हें अलग-थलग करना होगा और एक विकसित देश के लिए युवाओं को एकजुट करना होगा। पीएम मोदी ने कहा कि जो इलाके कभी नज़्सली हिंसा से प्रभावित थे, वहां अब विकास हो रहा है। जिन क्षेत्रों में पहले हथियारबंद उग्रवाद का बोलबाला था, वहां अब तरक्की और सरकारी पहलों का प्रतीक तिरंगा लहरा रहा है।

इटली से आई हैं... भाजपा नेता सुमित्रो चटर्जी का सोनिया गांधी और कांग्रेस पर हमला

नयी दिल्ली १६/०८ (संवाददाता): स्वतंत्रता दिवस समारोह में वंदे मातरम के गायन को लेकर शुरू हुआ विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। बीजेपी नेता लगातार सोनिया गांधी पर हमला बोल रहे हैं और उनसे माफी की मांग कर रहे हैं। अब वंदे मातरम के रचयिता बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के वंशज और बीजेपी नेता सुमित्रो चटर्जी ने भी इस मामले में सोनिया गांधी को चिट्ठी लिखकर सार्वजनिक रूप से माफी मांगने की मांग की है। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के वंशज सुमित्रो चटर्जी ने सोनिया गांधी को पत्र लिखकर घटना पर गहरा दुख और गुस्सा जाहिर किया है। उन्होंने अपने पत्र में लिखा कि 15 अगस्त को देश के 80वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर जो हुआ, वह न केवल दुर्भाग्यपूर्ण है बल्कि एक ऐतिहासिक भूल का शर्मनाक दोहराव भी है। सुमित्रो चटर्जी ने कहा कि वे एक सच्चे देशभक्त और बंकिम बाबू के परिवार के सदस्य होने के नाते यह पत्र

लिख रहे हैं और कांग्रेस मुज़्यालय में जो कुछ हुआ, उससे उन्हें भारी ठेस पहुंची है। मीडिया से बातचीत के दौरान सुमित्रो चटर्जी ने काफी तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, सोनिया गांधी इटली से आई हैं, उन्हें शायद वंदे मातरम का असली महत्व और इसकी भावना नहीं पता। लेकिन मल्लिकार्जुन खरगे तो भारत के ही हैं, उन्हें तो सब समझ आना चाहिए था और सोनिया जी को रोकना चाहिए था। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेताओं के इस रवैये से न केवल उनके परिवार को, बल्कि पूरे बंगाल और देश भर के लोगों को बहुत बुरा लगा है। सुमित्रो चटर्जी ने बताया कि उन्होंने सोनिया गांधी को मेल भेजकर वंदे मातरम के ऐतिहासिक और भावनात्मक महत्व के बारे में विस्तार से समझाया है। इस मेल की एक कॉपी कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को भी भेजी गई है। चटर्जी ने कहा कि राष्ट्रगीत के दौरान सोनिया गांधी का बॉडी लैंग्वेज और बर्ताव बिल्कुल भी बर्दाश्त करने लायक नहीं था। जब उनसे आगे के विरोध-प्रदर्शन के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी अनुशासन से चलती है और वे प्रदेश नेतृत्व के निर्देशों का इंतजार कर रहे हैं। पार्टी जैसा फैसला लेगी, आगे वैसा ही कदम उठाया जाएगा।

झारखंड में प्रदर्शनकारी छात्र हेमंत सोरेन का पुतला जलाएंगे, २० को करेंगे सीएम आवास का घेराव

रांची १६/०८ (संवाददाता): झारखंड में भर्ती परीक्षाओं में कथित गड़बड़ियों के खिलाफ़ विरोध कर रहे छात्रों ने घोषणा की है कि वे रविवार को राज्य के सभी 24 ज़िलों में मुज़्यमंत्री हेमंत सोरेन और कांग्रेस नेता राहुल गांधी के पुतले जलाएंगे। उनका आरोप है कि सज़ाधारी झामुमो-कांग्रेस गठबंधन उनकी मांगों पर ''ठोस कार्रवाई करने में नाकाम'' रहा है। 'जेपीएससी-जेएसएससी रिफॉर्म्स मंच' के तहत जारी विरोध प्रदर्शन का रविवार को 23वां दिन है। आंदोलनकारियों ने सज़ारूढ़ झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) और कांग्रेस पर छात्रों के मुद्दों को लेकर राजनीति करने का आरोप लगाया और घोषणा की कि वे सोरेन के इस्तीफे की मांग करते हुए 20 अगस्त को उनके आवास का घेराव करेंगे।

शनिवार को उन्होंने मांग की कि अगर ''मुज़्यमंत्री उनकी बात नहीं सुन रहे हैं'' तो राहुल गांधी झामुमो नीत गठबंधन से समर्थन वापस ले लें। उन्होंने देश के 80वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर और भर्ती परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता और सुधार की अपनी मांग को लेकर शनिवार को रांची में 'तिरंगा यात्रा' निकाली।

हाथ में राष्ट्रीय ध्वज लिए प्रदर्शनकारियों ने 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरज़्' जैसे नारे लगाए। जेपीएससी-जेएसएससी रिफॉर्म्स मंच के नेता रवींद्र पासवान ने कहा, ''हम 20 अगस्त को मुज़्यमंत्री आवास का घेराव करेंगे। हम उनके इस्तीफ़े की मांग करते हैं ज़्योंकि झामुमो और कांग्रेस, दोनों ही हमारे साथ राजनीति कर रहे हैं।

हमारी यह भी मांग है कि अगर मुज़्यमंत्री राहुल गांधी की बात नहीं सुन रहे हैं, तो उन्हें झामुमो के नेतृत्व वाले गठबंधन से समर्थन वापस ले लेना चाहिए।'' प्रदर्शनकारियों ने पूरे झारखंड के छात्रों से अपील की कि वे 20 अगस्त को मुज़्यमंत्री आवास के प्रस्तावित घेराव के लिए रांची में एकत्र हों। उन्होंने गांधी को भी आड़े हाथ लिया और कहा कि उन्होंने छात्रों का समर्थन करने की बात तो कही, लेकिन उसके बाद ''कोई ठोस कदम'' नहीं उठाया गया।

सुको सोमवार को कावेरी जल विवाद में तमिलनाडु की याचिका पर करेगा सुनवाई

नयी दिल्ली १६/०८ (संवाददाता): उच्चतम न्यायालय तमिलनाडु सरकार की उस याचिका पर सोमवार को सुनवाई करेगा, जिसमें कर्नाटक सरकार को तमिलनाडु के हिस्से का कावेरी नदी का जल तत्काल छोड़ने का निर्देश देने का अनुरोध किया गया है। उच्चतम न्यायालय की 17 अगस्त की वाद सूची के अनुसार, मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति विक्रमनाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ करेगी। शीर्ष अदालत ने 12 अगस्त को कहा था कि इस मामले में तमिलनाडु सरकार और द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) सहित अन्य पक्षों की ओर से दायर याचिकाओं पर 17 अगस्त को सुनवाई की जाएगी। इससे पहले, तमिलनाडु सरकार ने कहा था कि बारिश की कमी वाले साल में राज्य को कावेरी नदी के पानी का अपना उचित हिस्सा नहीं मिल रहा है। जोसफ विजय के नेतृत्व वाली तमिलनाडु सरकार ने तीन अगस्त को उच्चतम न्यायालय का रुख करते हुए कर्नाटक सरकार को तमिलनाडु के हिस्से

का पानी तत्काल छोड़ने का निर्देश देने का अनुरोध किया था। राज्य सरकार ने अपनी याचिका में दावा किया कि कावेरी जल विनियमन समिति (सीडज़्ल्यूआरसी) द्वारा तमिलनाडु के लिए निर्धारित जल की मात्रा और पड़ोसी राज्य कर्नाटक द्वारा छोड़ा गया पानी, दोनों ही तय हिस्से से काफी कम हैं। तमिलनाडु सरकार ने कहा कि 28 जुलाई को सीडज़्ल्यूआरसी की बैठक में कर्नाटक को 29 जुलाई से 15 दिन तक 3,500 ज़्यूसेक पानी छोड़ने का निर्देश दिया गया था। उसने कहा कि हालांकि, 29 जुलाई से दो अगस्त के बीच बिलिगुंडलु में छोड़े गए पानी की मात्रा 158 से 550 ज़्यूसेक के बीच रही। तमिलनाडु सरकार की ओर से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया कि तीन अगस्त तक कर्नाटक में केआरएस, काबिनी, हरंगी और हेमावती जलाशयों में कुल मिलाकर 77.537 टीएमसी पानी उपलज़्ध था।

पीएम मोदी के दिमागी नक्सल वाले बयान पर किरेन रिजिजू ने दी सफाई, विपक्ष के आरोपों को नकारा

नयी दिल्ली १६/०८ (संवाददाता): स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से पीएम नरेंद्र मोदी के दिमागी नज़्सल वाले बयान के बाद से हंगामा मचा हुआ है। अब इस पूरे विवाद पर केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने एंट्री ली है। उन्होंने पीएम के बयान की आलोचना कर रही विपक्षी पार्टियों को करारा जवाब दिया है। रिजिजू ने साफ किया कि पीएम मोदी ने विपक्षी नेताओं को नज़्सली मानसिकता वाला नहीं कहा था, बल्कि उनके बयान को गलत तरीके से पेश किया जा रहा है।

रिजिजू ने सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर करके बताया कि आखिर पीएम मोदी के दिमागी नज़्सल कहने का सही मतलब ज़्या था। उनके मुताबिक, इस कैटेगरी में तीन तरह के लोग आते हैं, जो लोग माओवादियों का सपोर्ट करते हैं और भारत के संविधान को फॉलो करने से इनकार करते हैं। जो अलगाववादियों के साथ खड़े होते हैं और अनुच्छेद 370 की वापसी का समर्थन करते हैं। जो लोग नॉर्थ-ईस्ट को बाकी भारत से काटने के लिए चिकन नेक कॉरिडोर को बंद करने की वकालत करते हैं।

दरअसल, पीएम मोदी ने 15 अगस्त को अपने भाषण में सुरक्षाकर्मियों के बलिदान को याद किया था और देश से नज़्सलवाद को लगभग खत्म करने की बात कही थी। हालांकि, उन्होंने एक नई वॉर्निंग दी थी कि जंगलों में बंदूक उठाने वाले नज़्सली तो अब खत्म हो रहे हैं, लेकिन शहरों और अलग-अलग हिस्सों में दिमागी नज़्सली एज़्टिव हैं। पीएम ने कहा था कि ऐसे लोगों की पहचान करके उन्हें अलग-थलग करना बहुत जरूरी है, ताकि देश के युवाओं को विकसित भारत के विजन से जोड़ा जा सके।

पीएम मोदी के इस बयान के बाद से ही विपक्षी दल सरकार पर लगातार हमलावर थे और उनका आरोप था कि सरकार सवाल पूछने वाले युवाओं और विपक्ष को निशाना बना रही है। रिजिजू ने इन्हीं आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि पीएम मोदी का निशाना सिर्फ और सिर्फ देश विरोधी ताकतों पर था, किसी राजनीतिक दल पर नहीं।

अमित शाह ने कांग्रेस पर वंदे मातरम के अपमान का आरोप लगाया, देश से माफी की मांग की

नयी दिल्ली १६/०८ (संवाददाता): कांग्रेस पर राष्ट्र गीत वंदेमातरम् का अपमान करने का आरोप लगाते हुये केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को मांग की कि विपक्षी दल इसके लिए देश की जनता एवं गीत के रचयिता बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की अमर आत्मा से माफी मांगे। शाह ने आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी ने वोट बैंक की लालच में कांग्रेस ने वंदे मातरम् को भुला दिया था। शाह निज़्बाहेड़ा (चिज़ौड़गढ़) में अटल गौरव स्मृति समारोह में एक जनसभा को संबोधित कर रहे थे।

शनिवार को दिल्ली के लालकिले पर स्वतंत्रता दिवस समारोह का ज़िक्र करते हुए शाह ने कहा कि इस समारोह में इस साल एक बड़ा बदलाव यह था कि आजादी के 80 साल के बाद लाल किले की प्राचीर पर और देश भर में जहां ध्वज वंदन हुआ वहां पर वंदेमातरम् का गायन 80 साल में पहली बार हुआ है। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा, कांग्रेस ने वंदे मातरम को भुला दिया है। उन्होंने कहा, ''बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की वह अमर कृति, एक गान के दो शज़्द वंदेमातरज़्... भारत माता की मैं वंदना करता हूं.. यह बोलते-बोलते हजारों लाखों लोग फांसी के फंदे पर चढ़ गए थे, गोलियां खाई थीं, लाठियां खाईं, कई साल जेल में रहे। शाह ने कहा, वोट बैंक की लालच में कांग्रेस ने वंदेमातरम् को भुला दिया था। उन्होंने कहा कि यह 150वां साल है वंदेमातरम् के प्राकट्य का... लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री मोदी ने वंदेमातरम् को फिर से एक नया आयुष्य देने का काम किया है। कांग्रेस के मुज़्यालय में शनिवार को आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्गीत के अपमान का आरोप लगाते हुए उन्होंने कहा, ''और इनकी निर्लज्जला देखिए।

कांग्रेस पार्टी के मुज़्यालय पर वंदेमातरम् का गान हो रहा था। चालू गान में कांग्रेस की नेत्री सोनिया जी ने कांग्रेस अध्यक्ष को गान रोकने का कहा है। हम सब टीवी पर देखते रह गए।'' उन्होंने कहा, (आजादी के) 80 साल के बाद बंकिम बाबू का यह अमर गान जब फिर से सज़्मान प्राप्त कर रहा है... वो भी सोनिया जी को रास नहीं आता है।

सोनिया जी 140 करोड़ की जनता आपको देख रही है। आपके द्वारा किया गया यह पाप इस देश की जनता कभी माफ नहीं करेगी। उन्होंने कहा, कोई स्वप्न में भी कैसे सोच सकता है कि वंदेमातरम का गान अधूरा छोड़ दिया जाए।

कांग्रेसियों को शर्म आनी चाहिए। और जरा सी भी शर्म बची है तो दो हाथ जोड़कर बंकिम बाबू की अमर आत्मा से और देश की जनता से माफी मांगनी चाहिए। इससे पहले शाह ने निज़्बाहेड़ा में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमा का अनावरण किया।

उन्होंने देश के विकास में वाजपेयी के योगदान को रेखांकित किया।

शाह ने कहा कि वाजपेयी ने कई बड़े फैसले लिए जिनमें पूरे विश्व के दबाव के बावजूद पोखरण में परमाणु परीक्षण कर भारत को परमाणु शक्ति बनाना शामिल है। उन्होंने कहा कि तत्कालीन वाजपेयी सरकार ने गांवों को सड़कों से जोड़ा, राष्ट्रीय राजमार्ग बनाए और अपने कार्यकाल के दौरान कई पहल शुरू कीं।

शाह ने कहा कि वाजयेपी ने अलग जनजाति कल्याण मंत्रालय बनाने का काम किया।गृह मंत्री ने कहा कि आदिवासी कल्याण के क्षेत्र में हुई प्रगति का प्रमाण द्रौपदी मुर्मू काभारत की राष्टपति चुना जाना है। उन्होंने कहा कि वाजपेयी जी ने न सज़ा में रहते हुए सिद्धांत छोड़ा न विपक्ष में रहते हुए ही सिद्धांत छोड़ा। ऐसे विरले कदाचित ही जन्म लेते हैं।

इसलिए उन्हें हमेशा अजातशत्रु के रूप में जाना जाता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हमेशा आदिवासी कल्याण को आगे बढ़ाया है। राज्य की भजनलाल शर्मा सरकार के कामकाज की सराहना करते हुए उन्होंने कहा, भजनलाल शर्मा की सरकार ने, हमने जो वादे किए थे वो सारे वादे पूरे करने की दिशा में बहुत स्पीड से काम चालू किया है।

राज्य में विपक्षी कांग्रेस व पूर्व मुज़्यमंत्री अशोक गहलोत पर कटाक्ष करते हुए शाह ने कहा, गहलोत जी और उनके विपक्ष के नेता, प्रदेश अध्यक्ष लड़ते रहते हैं। भारतीय जनता पार्टी ... जहां जहां जनता आशीर्वाद देती है जनता की सेवा में लगती है। उपर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और नीचे मुज़्यमंत्री भजनलाल शर्मा ... ये पांच साल में राजस्थान बहुत आगे बढ़ने वाला है।

इस अवसर पर उन्होंने राजस्थान सरकार के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण व शिलान्यास भी किया। इस अवसर पर मुज़्यमंत्री भजनलाल शर्मा भी मौजूद थे।

विविध समाचार

अयोध्या में सावन झूला मेला हुआ शुरु, १० लाख श्रद्धालुओं के पहुंचने का अनुमान

अयोध्या १६/०८ (संवाददाता): उत्तर प्रदेश के अयोध्या में श्रद्धालुओं के लिए महाकुंभ माने जाने वाले सावन झूला मेले की शुरुआत शनिवार से हो गई और इसके साथ ही रामनगरी भक्ति के रंग में रंग गई है। यह मेला 28 अगस्त तक चलेगा। प्रशासनिक सूत्रों के अनुसार, करीब 10 लाख श्रद्धालु अयोध्या में मौजूद हैं।

राम मंदिर ट्रस्ट की धार्मिक समिति के सदस्य मिथिलेश नंदिनी शरण ने बताया कि पहली बार सावन झूला मेले के दौरान आम श्रद्धालुओं को रामलला को झूला झुलाने का अवसर देने के लिए विशेष व्यवस्था की गई है। राम मंदिर के अनुष्ठान प्रभारी और मेले के व्यवस्थापक आचार्य इंद्रदेव मिश्र ने बताया कि सुरक्षा कारणों से सावन उत्सव के दौरान रामलला का झूला कुबेर टीला ले जाया जाएगा, जहां 'झूलन विहार' समारोह आयोजित होगा। उन्होंने बताया कि इस दौरान अयोध्या के विभिन्न मंदिरों से प्रतिदिन देवी-देवताओं की शोभायात्राएं निकलेंगी और इनका समापन मणिपर्वत पर सांस्कृतिक आयोजन के साथ होगा।

मिश्र ने बताया कि अयोध्या के 5,000 से अधिक मंदिरों में सावन झूला सजाया गया है। अयोध्या में छोटे-बड़े 5,000 से अधिक मंदिर हैं, लेकिन इस उत्सव की भव्यता श्री राम जन्मभूमि, कनक भवन, राजा दशरथ जी का महल, अशर्फी भवन, राम वल्लभा कुंज, दिव्य कला कुंज, रंग महल, जानकी महल, राज सदन, रूप कला कुंज और मणिराम दास जी की छावनी जैसे प्रमुख मंदिरों में विशेष रूप से देखने को मिलेगी। स्थानीय संतों के अनुसार, सावन झूला मेला मनाने की परंपरा बहुत प्राचीन है। ऐसी मान्यता है कि रामलला के जन्म के चार महीने बाद माता कौशल्या ने राजा दशरथ की अन्य रानियों के साथ मिलकर रामलला और उनके भाइयों को झूला झुलाया था और इस दौरान कजरी गीत गाए थे। अयोध्या के विभिन्न मंदिरों में यह सुंदर परंपरा सदियों से चली आ रही है। राम जन्मभूमि में भी सावन के पूरे महीने रामलला को सुंदर वस्त्रों और आभूषणों से सजाकर प्रतिदिन झूला झुलाया जाता है। सोमवार को अयोध्या में प्रसिद्ध नाग पंचमी का पर्व भी मनाया जाएगा। इस अवसर पर प्रसिद्ध नागेश्वर नाथ मंदिर में लाखों श्रद्धालुओं के पहुंचने की उम्मीद है। सावन झूला मेले को देखते हुए अयोध्या में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है और ड्रोन के जरिए निगरानी की जा रही है।

पूरे क्षेत्र को छह जोन और 29 सेक्टर में बांटकर दो पालियों में पुलिसकर्मियों की ड्यूटी लगाई गई है। अयोध्या के नगर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी ने बताया कि आवश्यकता के अनुसार पुलिस बल की तैनाती की जा रही है। उन्होंने कहा कि अपर पुलिस अधीक्षक से लेकर कांस्टेबल तक पर्याप्त संख्या में पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है, जिनमें महिला पुलिसकर्मी भी शामिल हैं।

इसके अलावा पीएसी, त्वरित कार्रवाई बल (आरएएफ), एटीएस कमांडो और राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) की टीमें भी उपलब्ध रहेंगी। ड्रोन से भी निगरानी की जाएगी। मणिपर्वत पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

त्रिपाठी ने कहा, "हमने अधिकारियों के बीच काम स्पष्ट रूप से बांट दिया है और जिम्मेदारियां तय कर दी हैं, ताकि किसी तरह की कमी न रहे।" प्रशासनिक अधिकारियों के अनुसार मेले के दौरान यातायात व्यवस्था, भीड़ नियंत्रण और आपात सेवाओं पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। श्रद्धालुओं की आवाजाही सुचारू बनाए रखने के लिए मणिपर्वत से लेकर अयोध्या के विभिन्न हिस्सों तक पर्याप्त पुलिस बल तैनात रहेगा। जिला स्तर पर सभी आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक गौरव ग्रोवर ने कहा कि सावन झूला मेला श्रद्धालुओं की आस्था का प्रतीक है। ग्रोवर ने कहा, "हमने सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए हैं। मणिपर्वत समेत मेले के पूरे क्षेत्र को जोन और सेक्टर में बांटकर पर्याप्त संख्या में पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई है।

सीसीटीवी कैमरों और ड्रोन के जरिए निगरानी रखी जाएगी। श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है और किसी भी तरह की अप्रिय स्थिति को रोकने के लिए सभी अधिकारी सतर्क हैं।

सिंधु जल संधि पर उमर अब्दुल्ला का बयान-पाकिस्तान ने हमारा जीवनरक्त छीना, जारी रहे निलंबन

नयी दिल्ली १६/०८ (संवाददाता): जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने शुक्रवार को सिंधु जल समझौते को निलंबित रखने की मांग की। उन्होंने कहा कि इस समझौते के तहत पानी के संसाधनों के इस्तेमाल पर लगी पाबंदियों से इलाके के लोगों को नुकसान उठाना पड़ा है। उन्होंने सिंधु जल समझौते पर पाकिस्तान के रुख पर निशाना साधते हुए कहा कि इस्लामाबाद खुद को कश्मीरियों का बड़ा हमदर्द बताता है, लेकिन जब पानी के मुद्दे की बात आती है, तो वह हमदर्दी गायब हो जाती है।

उन्होंने पत्रकारों से कहा हमारी जीवन-रेखा छीन ली गई है; ये हमारी नदियां हैं और इन पर हमारा पहला हक था। पाकिस्तान खुद को कश्मीरियों का बड़ा हमदर्द बताता है, लेकिन जब पानी के मुद्दे की बात आती है, तो वह हमदर्दी गायब हो जाती है। तब यह हमदर्दी कहां थी जब हमसे अपनी ही नदियों के इस्तेमाल का हक छीन लिया गया था? तब से हम इस सिंधु जल समझौते का खामियाजा भुगत रहे हैं।

उन्होंने आगे कहा, सिंधु जल समझौता निलंबित है और इसे निलंबित ही रहना चाहिए ताकि हम इस पानी का सही इस्तेमाल कर सकें। भारत ने पहलगाम आतंकी हमले के बाद सिंधु जल समझौते को रोक दिया था। सरकार ने कहा था कि 1960 की सिंधु जल संधि को तुरंत प्रभाव से तब तक रोक दिया जाएगा, जब तक पाकिस्तान भरोसेमंद और पक्के तौर पर सीमा-पार आतंकवाद को समर्थन देना बंद नहीं कर देता।

इस कदम के पाकिस्तान के लिए दूरगामी नतीजे होंगे, ज़्योंकि यह देश अपनी 1.6 करोड़ हेज़्टेयर कृषि भूमि के 80त्न हिस्से और कुल पानी के इस्तेमाल के 93त्न हिस्से के लिए सिंधु नदी प्रणाली पर बहुत ज़्यादा निर्भर है। यह प्रणाली 23.7 करोड़ लोगों की ज़रूरतें पूरी करती है और गेहूं, चावल और कपास जैसी फसलों के ज़रिए पाकिस्तान की त्रष्ठक्क में एक-चौथाई योगदान देती है।

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ़ ने पानी के मुद्दे पर सीधे जवाब देने की धमकी दी है, जबकि इस्लामाबाद देश के अंदर कई संकटों से जूझ रहा है - खैबर पख्तूनख्वा में उग्रवादी हिंसा का बढ़ना, बलूचिस्तान और पाकिस्तान के कब्ज़े वाले जम्मू-कश्मीर में अशांति और मानवाधिकारों का उल्लंघन, और साथ ही पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की लगातार कैद। शरीफ़ ने एक बार फिर भारत को अपने बयानों का निशाना बनाया। गुरुवार को पाकिस्तान के स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर एक कार्यक्रम में बोलते हुए उन्होंने कहा, अगर भारत सही रास्ते पर नहीं आता है, तो हम उसे सीधा जवाब देंगे। एक और सवाल का जवाब देते हुए, उमर अब्दुल्ला ने शिरोमणि अकाली दल के प्रमुख सुखबीर सिंह बादल पर हुए हमले की निंदा की।

केरल में वंदे मातरम न गाने पर भाजपा का आरोप, चंद्रशेखर बोले-भुगतने होंगे परिणाम

तिरुवनंतपुरम १६/०८ (संवाददाता): भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की केरल इकाई के अध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर ने रविवार को आरोप लगाया कि स्वतंत्रता दिवस पर राज्य के आधिकारिक समारोहों में राष्ट्रगीत 'वंदे मातरज़्' नहीं गाने का फैसला यूडीएफ सरकार ने "जानबूझकर" लिया था और चेतावनी दी कि इसके "राजनीतिक और कानूनी परिणाम" होंगे। उन्होंने कहा, "हम इसे यूं ही नहीं छोड़ सकते।" चंद्रशेखर ने यहां संवाददाताओं से कहा कि कांग्रेस शासित कर्नाटक और तेलंगाना तथा गैर-भाजपा शासित हिमाचल प्रदेश में वंदे मातरम् गाया गया, लेकिन केरल में ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने आरोप लगाया कि यह फैसला मुज़्यमंत्री वी. डी. सतीशन के नेतृत्व वाली सरकार पर इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग और जमात-ए-इस्लामी के "नियंत्रण" के कारण लिया गया।उन्होंने एक दिन पहले नयी दिल्ली में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) की ओर से आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में वंदे मातरम् का पूरा संस्करण गाए जाने का कथित रूप से कांग्रेस नेता

सोनिया गांधी द्वारा विरोध किए जाने की भी आलोचना की। नेमोम से भाजपा विधायक चंद्रशेखर ने कहा कि वहां जो हुआ, उसे बयां करने के लिए उनके पास शज़्द नहीं हैं। उन्होंने आरोप लगाया, "जब इस देश द्वारा स्वीकार की गई एक महिला वंदे मातरम् का गायन रोकने की कोशिश करती है, तो इससे पता चलता है कि उनकी राजनीति, हित और लक्ष्य ज़्या हैं। हमें इसे समझने की जरूरत है। वे राजनीतिक लाभ के लिए किसी भी हद तक गिर सकते हैं।" माकपा के राज्य सचिव बिनॉय विश्वम ने कांग्रेस द्वारा आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में वंदे मातरम् का पूरा संस्करण गाए जाने के लिए कांग्रेस से माफी मांगने की मांग की। विश्वम ने संवाददाताओं से कहा कि भारत से प्रेम करने वाली कोई भी धर्मनिरपेक्ष पार्टी वंदे मातरम् को देश के राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकार नहीं कर सकती। उन्होंने कहा, "जब भाजपा सरकार राष्ट्रगान की जगह वंदे मातरम् को लाने की कोशिश करती है, जो आरएसएस का पसंदीदा है, तो उसके खिलाफ रुख अपनाना चाहिए। भले ही यह आरएसएस या भाजपा का पसंदीदा हो, भारत इसे राष्ट्रगीत या राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार नहीं कर सकता।" उन्होंने कहा कि कांग्रेस के कार्यक्रम में मल्लिकार्जुन खरगे, सोनिया गांधी और राहुल गांधी की मौजूदगी में वंदे मातरम् का पूरा संस्करण गाया गया और उनमें से किसी ने इसका विरोध नहीं किया।

नित्यायनंद राय का बड़ा दावा: भारत अब नक्सल मुक्त, आंतरिक सुरक्षा की ऐतिहासिक जीत

नयी दिल्ली १६/०८ (संवाददाता): केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने गुरुवार को राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक स्तर पर पहचान बनाने की दिशा में भारत की बदलाव लाने वाली यात्रा पर प्रकाश डाला। गया के सर्किट हाउस में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, मंत्री ने घोषणा की कि भारत ने सफलतापूर्वक नज़्सलवाद को खत्म कर दिया है, जो आंतरिक सुरक्षा के लिए एक ऐतिहासिक जीत है। आंतरिक शांति के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता पर बात करते हुए, मंत्री राय ने कहा कि अप्रैल 2026 तक भारत पूरी तरह से नज़्सलवाद-मुक्त हो गया है। राय ने बताया कि यह उपलब्धि उग्रवाद के खिलाफ लगातार अपनाई गई %ज़ीरो-टॉलरेंस% रणनीति का नतीजा है। मंत्री ने इस बात पर ज़ोर दिया कि सरकार की

मज़बूत राष्ट्रीय सुरक्षा नीति को देश की सैन्य क्षमताओं में अभूतपूर्व निवेश का समर्थन प्राप्त है। उन्होंने कहा कि भारत का रक्षा बजट ?2.5 लाख करोड़ से बढ़कर ?8 लाख करोड़ हो गया है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि इस निवेश से सेना को आधुनिक बनाने और देश में ही हथियार बनाने (स्वदेशी मैन्युफैक्क्ररिंग) को बढ़ावा मिला है, साथ ही देश बदलती वैश्विक सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हुआ है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत के बढ़ते प्रभाव का ज़िक्र करते हुए राय ने कहा कि दुनिया अब भारत को एक अहम फ़ैसला लेने वाले देश के तौर पर देखती है। वैश्विक कूटनीतिक माहौल का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय नेता प्रधानमंत्री मोदी के मज़बूत और निर्णायक नेतृत्व को तेज़ी से पहचान रहे हैं। मंत्री ने कहा कि अभी कल ही अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि %मोदी मज़बूत हैं।% यह इस बात का सबूत है कि आज दुनिया के बड़े फ़ैसले प्रधानमंत्री मोदी की भागीदारी और सहयोग से लिए जा रहे हैं। मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत ने दुनिया में एक मज़बूत पहचान बनाई है, और इसकी नीतियां गरीबों, किसानों, युवाओं और महिलाओं के कल्याण और सशक्तिकरण पर केंद्रित हैं। राय ने बताया कि पिछले 12 साल भारत के लिए बदलाव लाने वाले रहे हैं। उन्होंने कहा कि सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के मंत्र ने भारत को दुनिया की प्रमुख आर्थिक ताकतों में मजबूती से स्थापित किया है। उन्होंने देश की सीमाओं को सुरक्षित करने और अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का श्रेय मौजूदा सरकार को दिया और कहा कि तकनीक का विस्तार देश के हर कोने तक पहुंचा है। उन्होंने लाखों लोगों को पक्के घर देने में %प्रधानमंत्री आवास योजना% की सफलता और 80 करोड़ से ज़्यादा नागरिकों को मुफ़्त राशन बांटने का भी ज़िक्र किया।

जन धन योजना, उज्ज्वला योजना और हर घर जल मिशन जैसी पहलों ने आम आदमी के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में अहम भूमिका निभाई है। मंत्री ने कृषि बजट में ऐतिहासिक बढ़ोतरी और किफायती खाद उपलब्ध कराने का ज़िक्र किया। उन्होंने खास तौर पर बिहार की उपलब्धियों का ज़िक्र किया, जिनमें नेशनल मखाना बोर्ड की स्थापना, मिथिला मखाना को तड्ढ टैग मिलना और पूसा एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी को सेंट्रल यूनिवर्सिटी का दर्जा मिलना शामिल है।

नरेंद्र मोदी का नया इंस्टाग्राम वीडियो वायरल, जानवरों के साथ उनके खास लगाव की लोग कर रहे तारीफ

नयी दिल्ली १६/०८ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जानवरों के प्रति प्रेम एक बार फिर चर्चा में है। उन्होंने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक नया वीडियो शेयर किया है, जिसमें उनका पशु-पक्षियों के प्रति गहरा लगाव नजर आ रहा है। मंच पर अज़्सर सज़्त और गंभीर दिखने वाले पीएम मोदी इस वीडियो में बेहद सहज, शांत और मुस्कुराते हुए दिखाई दे रहे हैं।

सोशल मीडिया पर लोग उनके इस संवेदनशील और दयालु अंदाज की जमकर तारीफ कर रहे हैं। इस रील को पोस्ट करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने एक बेहद खास संदेश भी लिखा। उन्होंने लिखा, हर सुबह अपने दोस्तों को खाना खिलाना मेरा डेली रूटीन है। कल सुबह, उन्हें किसी तरह पता चल गया कि मैं जल्दी निकल रहा हूं, इसलिए वे मुझसे मिलने आए जब मैं लाल किले के लिए निकल रहा था। हमेशा की तरह स्पेशल! पीएम का यह भावुक संदेश लोगों के दिलों को छू रहा है।

पाक सेना का भरोसेमंद, सऊदी अरब में गुप्त मिशन पर भी भेजा गया था, तहव्वुर राणा ने पछताछ में किया बड़ा खुलासा

नयी दिल्ली१६/०८ (संवाददाता): 26/11 मुंबई आतंकी हमलों के पीछे मुज़्य साजिशकर्ताओं में से एक तहव्वुर हुसैन राणा ने चौंकाने वाले दावे करते हुए खुलासा किया है कि वह पाकिस्तानी सेना का एक भरोसेमंद ऑपरेटिव था और उसे सऊदी अरब में एक गुप्त मिशन पर भेजा गया था।

मुंबई क्राइम ब्रांच ने 26/11 आतंकी हमले से संबंधित मामले में एनआईए की हिरासत में मौजूद तहव्वुर राणा से पूछताछ की थी। पुलिस सूत्रों के अनुसार, मामले से जुड़ी कई जानकारियां पहले से ही आधिकारिक जांच रिकॉर्ड का हिस्सा हैं। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि तहव्वुर राणा अपने पहले के बयानों पर मानसिक रूप से अड़ा हुआ है। अधिकारी ने कहा कि वह पुलिस को जानकारी दे रहा है लेकिन उसके बात करने का तरीका भी उसकी कट्टरपंथी विचारधारा को दर्शाता है। राणा ने दावा किया कि वह पाकिस्तानी सेना का एक भरोसेमंद ऑपरेटिव था और इराक द्वारा कुवैत पर आक्रमण के दौरान उसे सऊदी अरब में एक गुप्त मिशन पर भेजा गया था, जिससे पाकिस्तान की सेना के लिए उसके रणनीतिक महत्व पर प्रकाश पड़ा। उसने कहा कि उसने 1986 में आर्मी मेडिकल कॉलेज, रावलपिंडी से एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी की और फिर क्वेटा में कैप्टन (डॉज़्टर) के पद पर नियुक्त हुआ। राणा ने सिंध, बलूचिस्तान, बहावलपुर और सियाचिन-बलोतरा सेज़्टर सहित पाकिस्तान के संवेदनशील सैन्य क्षेत्रों में काम करने का उल्लेख किया। उसने अज़्दुल रहमान पाशा, साजिद मीर और मेजर इकबाल जैसे प्रमुख 26/11 साजिशकर्ताओं को जानने की बात स्वीकार की, जो सभी पाकिस्तान से जुड़े थे और मुंबई हमलों में शामिल थे। राणा हिंदी, अंग्रेजी, अरबी और पश्तो सहित कई भाषाओं में पारंगत है। उन्होंने खुलासा किया कि डेविड हेडली, जो कि अन्य मुज़्य आरोपी है, ने 2003 और 2004 के बीच लश्कर-ए-तैयबा के साथ तीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भाग लिया था। हालांकि, उसे सभी पाठ्यक्रमों के नाम याद नहीं हैं। मुंबई इमिग्रेशन सेंटर के बारे में पूछे जाने पर राणा ने दावा किया कि यह उसका अपना विचार था, हेडली का नहीं। उसने यह भी कहा कि हेडली को भेजे गए पैसे का उद्देश्य व्यावसायिक खर्च था, लेकिन उसने स्वीकार किया कि मुंबई कार्यालय में ग्राहकों को आकर्षित करने में कठिनाइयाँ थीं। अपने सैन्य करियर पर चर्चा करते हुए, राणा ने खुलासा किया कि सियाचिन में अपनी पोस्टिंग के दौरान, वह फुज़्फुसीय एडिमा से पीड़ित था, जिसके कारण उसे लंबे समय तक अनुपस्थित रहना पड़ा। इस अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप उसे भगोड़ा करार दिया गया और सेवा से बर्खास्त कर दिया गया। पुलिस ने कहा कि राणा को डेविड हेडली के अदालती बयानों के बारे में अच्छी जानकारी है।

विविध समाचार

नाग पंचमी की पूजा के दौरान इन बातों का रखें विशेष ध्यान, प्रसन्न होंगे नाग देवता

पंचांग के अनुसार नाग पंचमी का पर्व 17 अगस्त को मनाया जाएगा। यह त्योहार नाग देवता को समर्पित है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन सांपों को दूध पिलाने से जातक को शुभ फल की प्राप्ति होती है और नाग देवता की पूजा करने से सुख-समृद्धि का आशीर्वाद प्राप्त होता है। लेकिन पूजा के दौरान कुछ गलतियों को करने से कई समस्या जीवन में आ सकती है।

सावन के महीने में नाग पंचमी का पर्व बेहद उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह त्योहार सावन माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि पर पड़ता है। इस दिन नाग देवता की पूजा-अर्चना और व्रत करने का विधान है। मान्यता है कि नाग देवता की उपासना करने से साधक के सभी कष्ट दूर होते हैं। इस दिन पूजा के दौरान कई बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। पूजा नियम का पालन न करने से साधक शुभ फल की प्राप्ति से वंचित रहता है। चलिए इस लेख में जानते हैं नाग पंचमी की पूजा के नियम के बारे में।

इन बातों का रखें ध्यान

नाग पंचमी के दिन सुबह जल्दी उठें और स्नान करने के बाद पूजा करें। इस दिन मंदिर में चांदी के नाग और नागिन का दूध से अभिषेक करें और जीवन में सुख-शांति की प्राप्ति के लिए कामना करें। मान्यता है कि ऐसा करने से जातक को राहु और केतु से संबंधित दोषों से छुटकारा मिलता है।

- नाग पंचमी पर चांदी के नाग और नागिन का दान करने से कार्यों में आ रही बाधा दूर होती है और कालसर्प दोष से मुक्ति मिलती है। इसके अलावा साधक को नाग देवता का आशीर्वाद प्राप्त होता है।
- नाग पंचमी के अवसर पर पूजा के दौरान नाग देवता को दूध अर्पित करें। इससे भय दूर होता है और परिवार के सदस्यों को सुख-शांति की प्राप्ति होती है।
- नाग पंचमी के दिन नाग देवता और शिवलिंग पर दूध अर्पित करने के लिए तांबे के धातु से बने पात्र का प्रयोग नहीं करना चाहिए। दूध चढ़ाने के लिए पीतल से बने पात्र को अच्छा माना जाता है।
- इसके अलावा नुकीली चीजों के इस्तेमाल से दूर रहें। ऐसा करना हानिकारक हो सकता है और इससे नाग देवता क्रोधित हो सकते हैं।

नाग पंचमी के दिन क्यों नहीं बनाई जाती रोटी

नाग पंचमी हिंदुओं के प्रमुख त्योहारों में से एक है. यह दिन पूरी तरह से नागों या सांपों को समर्पित है, जिनकी हिंदू पौराणिक कथाओं में पूजा की जाती है. इस दिन बड़ी संख्या में भक्त नागों की पूजा करते हैं. यह त्योहार भारत और नेपाल में भी पूरी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है. हिंदू कैलेंडर के अनुसार इस साल नाग पंचमी सावन के महीने में शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि यानी 17 अगस्त को मनाई जाएगी.

नाग पंचमी सावन के महीने में आती है जो भगवान शिव को समर्पित एक पवित्र महीना है. हिंदू शास्त्रों के अनुसार, नागों को हमेशा एक विशेष स्थान दिया जाता है और उन्हें भगवान के रूप में पूजा जाता है. नाग पंचमी के इस शुभ दिन पर, भक्त भगवान के रूप में नागों, सर्पों या सांपों की पूजा करते हैं. लोग मिट्टी से सांप बनाते हैं और उन्हें अलग-अलग रूप देते हैं और उन्हें रंगते हैं, उनकी पूजा करते हैं और दूध और अन्य खाद्य पदार्थ चढ़ाते हैं. कई लोग विशेष रूप से दक्षिण भारत में नागों या सांपों से जुड़े मंदिरों में जाते हैं और उनकी पूजा करते हैं. उन मंदिरों में विशेष पूजा की जाती है और लोग इस त्योहार को बहुत भव्यता के साथ मनाते हैं. सपेरे भी सांपों को लेकर सड़कों पर निकलते हैं और उन्हें दूध और पैसे चढ़ाए जाते हैं.

नाग पंचमी का क्या है इतिहास

हिंदू धर्म में नाग पंचमी के उत्सव से जुड़ी कई पौराणिक कथाएं हैं. ऐसी ही एक लोकप्रिय कहानी भगवान कृष्ण और कंस की है. चूंकि भगवान कृष्ण को कंस के अंत का कारण माना जाता था, इसलिए कंस ने भगवान कृष्ण को मारने के लिए कालिया नामक एक सांप को भेजा था. एक दिन जब भगवान कृष्ण नदी के पास अपने दोस्तों के साथ खेल रहे थे, तो उनकी गेंद पानी में गिर गई. जब वह अपनी गेंद को खोजने के लिए पानी में उतरे, तो उन पर कालिया ने हमला कर दिया. लेकिन अपनी विशेष शक्तियों के कारण, कृष्ण ने न केवल सांप को हराया बल्कि उस पर विजय प्राप्त की और उसके सिर पर बैठकर बांसुरी बजाई. कालिया ने बालकृष्ण से माफी मांगी और वादा किया कि वह कभी भी गांव वालों को नुकसान पहुंचाने के लिए वापस नहीं आएगा यह दिन कालिया पर बालकृष्ण की जीत का प्रतीक है.

नाग पंचमी मंत्र

ॐ नवकुलया विद्महे विषदंतये धीमहि तन्नो सर्प: प्रचोदयात..!!

आपको बता दें कि नाग पंचमी के दिन लोहे की वस्तुओं का प्रयोग वर्जित माना जाता है. ऐसे में अगर आप लोहे के तवे पर रोटी बनाते हैं तो यह बहुत ही अशुभ माना जाता है. इतना ही नहीं, ऐसी भी मान्यता है कि तवे को सांप के फन का प्रतीक माना जाता है. ऐसे में तवे को आंच या गैस पर चढ़ाने से नाग देवता नाराज हो जाते हैं. इसलिए नाग पंचमी के दिन तवे को चूल्हे पर नहीं रखना चाहिए. इसके अलावा तवे को राहु का प्रतीक भी माना जाता है. वहीं, अगर इस दिन तवे का प्रयोग किया जाए तो आपकी कुंडली में राहु का प्रभाव बढ़ जाता है. जिससे कई तरह की परेशानियां शुरू हो जाती हैं. इसलिए इस दिन रोटी खाना वर्जित माना जाता है. इसके साथ ही अगर कोई नाग पंचमी के दिन रोटी खाता है तो उसके जीवन में धन की कमी भी होती है.

नाग पंचमी पर क्यों पीटते हैं गुड़िया

पौराणिक कथाओं के अनुसार एक लड़का महादेव का बहुत बड़ा भक्त था. वह प्रतिदिन भगवान शिव की पूजा करने के लिए मंदिर जाता था. उस लड़के को मंदिर में प्रतिदिन नाग देवता के दर्शन होते थे. एक बार सावन के महीने में जब वह लड़का अपनी बहन के साथ शिवलिंग की पूजा करने आया. तब भाई-बहन की पूजा से प्रसन्न होकर नाग देवता उन दोनों के पास आकर बैठ गए. यह देखकर लड़के की बहन बहुत डर गई. उसे लगा कि कहीं सांप उसके भाई को न काट ले, इसलिए उसने सांप को डंडे से पीटना शुरू कर दिया. जिससे सांप बहुत घायल हो गया. भाई सांप की हालत देखकर बहुत दुखी हो रहा था. उस समय मंदिर में उपस्थित पुजारी ने कहा कि एक निर्दोष सांप को प्रताड़ित करने के कारण बहन पर सर्प श्राप लग गया है. जिसके कारण तुम्हारी बहन को कई गंभीर परिणाम भुगतने होंगे. भाई ने इस श्राप से मुक्ति पाने का उपाय पूछा तो पुजारी ने उसे कपड़े की एक गुड़िया बनाने को कहा. लड़के ने पुजारी के बताए अनुसार कपड़े की एक गुड़िया बनाई और उसे 11 बार सीधा और 11 बार उल्टा पीटना शुरू कर दिया. फिर उसने गुड़िया को जमीन में गहरा गाड़ दिया और इसके बाद सांप की पूजा की. भाई के ऐसा करते ही बहन को सर्प श्राप से मुक्ति मिल गई. कहा जाता है कि तभी से नाग पंचमी पर गुड़िया को पीटा जाने लगा ताकि नाग देवता को किसी भी प्रकार की पीड़ा न हो.

कब है नाग पंचमी? सही तारीख, पूजा का शुभ समय

मुहूर्त और राहुकाल का समय
नाग पंचमी का पर्व सावन महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है। वर्ष 2026 में पंचमी तिथि दो तारीखों यानी 16 और 17 अगस्त को पड़ रही है। इसी वजह से लोगों के बीच यह सवाल है कि नाग पंचमी का व्रत और पूजन 16 अगस्त को किया जाए या 17 अगस्त को। पंचांग के अनुसार तिथि और सूर्योदय के नियम को समझने पर इस सवाल का स्पष्ट उत्तर मिल जाता है।

नाग पंचमी 16 या 17 अगस्त को?

दृक पंचांग के अनुसार सावन शुक्ल पंचमी तिथि 16 अगस्त को शाम 4 बजकर 52 मिनट पर आरंभ होगी और 17 अगस्त को शाम 5 बजे समाप्त होगी। यानी पंचमी तिथि 16 अगस्त की शाम से शुरू होकर अगले दिन शाम तक रहेगी। हिंदू धर्म में अधिकतर व्रत और त्योहार उस तिथि के आधार पर निर्धारित किए जाते हैं, जो सूर्योदय के समय मौजूद रहती है। 17 अगस्त को सूर्योदय के वक्त पंचमी तिथि विद्यमान रहेगी। इस दिन सूर्योदय सुबह 5 बजकर 51 मिनट पर होगा। इसलिए पंचांग और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार नाग पंचमी का पर्व 17 अगस्त 2026 को मनाना उचित रहेगा।

पूजा का शुभ समय

17 अगस्त को नाग पंचमी की पूजा के लिए सुबह 5:51 बजे से 8:29 बजे तक का समय शुभ रहेगा। इस 2 घंटे 37 मिनट की अवधि में नाग देवता की पूजा-अर्चना की जा सकती है। मान्यता है कि नाग पंचमी पर विधि-विधान से पूजा करने और शिव आराधना करने से नाग संबंधी दोषों से राहत मिलती है। कालसर्प दोष से जुड़े उपाय भी इस दिन किए जाते हैं। इस दिन ब्रह्म मुहूर्त सुबह 4:24 बजे से 5:08 बजे तक रहेगा। वहीं अभिजीत मुहूर्त सुबह 11:59 बजे से दोपहर 12:51 बजे तक रहेगा। निशिता मुहूर्त रात 12:03 बजे से 12:47 बजे तक रहने वाला है।

नाग पंचमी पर राहुकाल का समय

17 अगस्त को राहुकाल सुबह 7:30 बजे से 9:08 बजे तक रहेगा। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार राहुकाल में राहु-केतु से संबंधित दोषों की शांति के लिए भगवान शिव की आराधना की जाती है। कालसर्प दोष को भी राहु और केतु से जुड़ा माना जाता है। ऐसे में इस दिन शिव पूजन, मंत्र जाप और दोष निवारण से जुड़े धार्मिक उपाय किए जा सकते हैं।

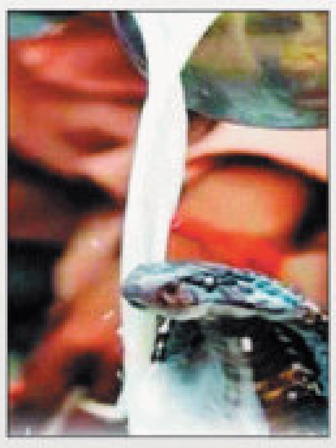

नाग पंचमी पर बनेंगे रवि और शुभ योग

इस बार नाग पंचमी के दिन दो विशेष योग बन रहे हैं। इनमें पहला रवि योग है, जो 17 अगस्त को सुबह 5:51 बजे से शुरू होकर सुबह 8:04 बजे तक रहेगा। इसके बाद रवि योग 18 अगस्त को सुबह 4:58 बजे से 5:52 बजे तक रहेगा। ज्योतिषीय मान्यता में रवि योग को शुभ माना जाता है और इस दौरान किए गए शुभ कार्यों के लिए यह समय अनुकूल माना जाता है। इसके अलावा 17 अगस्त को सुबह से शुभ योग भी रहेगा, जो 18 अगस्त को तड़के 3:29 बजे तक चलेगा। इसके बाद शुक्ल योग आरंभ हो जाएगा।

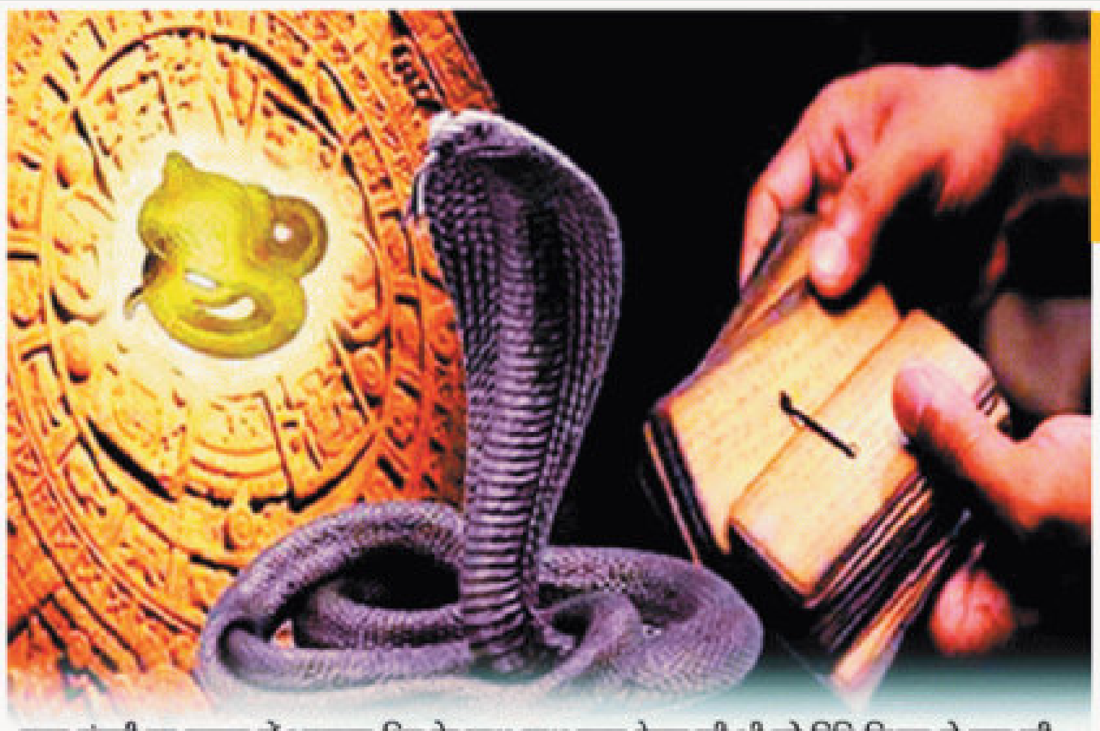

नाग पंचमी पर सावन में भगवान शिव के साथ-साथ नाग देवता की भी पूरे विधि विधान से पूजा की जाती है। नागपंचमी के दिन नाग देवता की पूजा करने से न केवल सर्प दोष दूर होते हैं, बल्कि नाग को दूध पिलाने से कई संकट भी दूर होते हैं। आइए जानते हैं, नाग पंचमी की सही तिथि, पूजा की विधि और इस बारे में कि यह योग किस प्रकार आपके लिए लाभकारी है ...

नाग पंचमी पर करें नाग दोष और काल सर्प दोष से जुड़े ये अचूक उपाय

अक्सर लोग नाग दोष और काल सर्प दोष को एक मान कर गलत पूजा या उपाय कर लेते हैं जिसके कारण इन दोषों का प्रभाव कम होने के बजाय बढ़ जाता है। ऐसे में आइये जानते हैं कि काल सर्प दोष और नाग दोष में क्या अंतर है। सनातन धर्म में नागों का विशेष महत्व है और उन्हें देवता के रूप में पूजा जाता है। वहीं, ज्योतिष शास्त्र में सर्पों से जुड़े दोषों का उल्लेख मिलता है जिन्हें नाग दोष और काल सर्प दोष के नाम से जाना जाता है। इन दोषों से व्यक्ति के जीवन में कई तरह की परेशानियां आ सकती हैं। हालांकि अक्सर लोग नाग दोष और काल सर्प दोष को एक मान कर गलत पूजा या उपाय कर लेते हैं जिसके कारण इन दोषों का प्रभाव कम होने के बजाय बढ़ जाता है।

क्या होता है नाग दोष?

नाग दोष मुख्य रूप से राहु के नकारात्मक प्रभाव के कारण बनता है। यह तब उत्पन्न होता है जब कुंडली में राहु या केतु का संबंध कुछ विशेष भावों जैसे पहला, दूसरा, पांचवां, सातवां, आठवां आदि होता है। नाग दोष अक्सर पूर्वजों से संबंधित कर्मों या किसी नाग के अनादर के कारण उत्पन्न माना जाता है। यदि पूर्वजो ने अन्जाने में किसी नाग को क्षति पहुंचाई हो या फिर किसी नाग को भूल से मार दिया हो और फिर उसके बाद उस नाग का विधिवत अंतिम संस्कार न किया हो और न ही क्षमा मांगी हो। नाग दोष से पीड़ित व्यक्ति को सबसे ज्यादा वैवाहिक जीवन में परेशानियां झेलनी पड़ सकती है।

क्या होता है काल सर्प दोष?

कालसर्प दोष तब बनता है जब राहु और केतु के बीच कुंडली के सभी 7 ग्रह सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि आ जाते है। इसमें कुंडली का आधा हिस्सा राहु-केतु के बीच घिर जाता है और बाकी आधा खाली रहता है। यह दोष 12 प्रकार के है जो राहु-केतु की स्थिति पर निर्भर करते है।

कालसर्प दोष से पीड़ित व्यक्ति को जीवन में संघर्ष, काम में बार-बार बाधाएं, आर्थिक परेशानियां, स्वास्थ्य समस्याएं और रिश्तो में तनाव का सामना करना पड़ता है। यहां तक कि इस दोष से पीड़ित लोगों को नींद में सांप दिखने लगते है या फिर बहुत ज्यादा गला घुटने जैसा महसूस होने लग जाता है।

नाग दोष और काल सर्प दोष के उपाय

नाग दोष और काल सर्प दोष से छुटकारा पाने के लिए भगवान शिव का अभिषेक करना बहुत शुभ माना जाता है क्योंकि नाग शिवजी के गले का हार है। ऐसे में शिव पूजन से इन दोनो दोषो का प्रभाव निष्फल हो जाता है। इसके अलावा, ॐ नम: शिवाय मंत्र का रोजाना जाप भी बहुत असरदार है। किसी भी सोमवार या फिर नाग पंचमी के दिन चांदी के नाग-नागिन का जोड़ा बनवाएं। इसे एक थाली में रखकर कच्चा दूध, बताशा और फूल अर्पित करें। फिर ॐ नागेंद्रहाराय नम: मंत्र का जाप करते हुए इस जोड़े को शिवलिंग पर अर्पित कर दें।

कलिंग समाचार

संपादकीय

कॉकरोच अब किस दिशा में बढ़ेंगे

जंतर-मंतर पर पेपर लीक के खिलाफ आंदोलन खत्म हो चुका है और धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा भी हो गया है। इस बीच प्रदर्शनकारियों पर पुलिस की ज्यादती को लेकर सुप्रीम कोर्ट में याचिकाएं दाखिल की गई हैं, जिन पर सुनवाई चल रही है। इस तरह देखा जाए तो कॉकरोच जनता पार्टी ने मोदी सरकार के नुमाइंदों के साथ मिलकर जो समझौता किया था और महीने भर से ऊपर चला आंदोलन खत्म हुआ था, तो अब कॉकरोच जनता पार्टी किस दिशा में आगे बढ़ेगी। क्या वह किसी राजनैतिक दल में तब्दील होगी, या फिर शिक्षा व्यवस्था के जो अनसुलझे सवाल हैं, उन्हें उठाएगी, या उसकी भूमिका बस यहीं तक सीमित थी, ऐसे कई सवालों पर जवाब मिलने अब शुरु हो गए हैं। दिपके के मुताबिक सीजेपी अब देश भर में एक नयी मुहिम छेड़ रही है, जिसका नाम होगा क्या बोलती पब्लिक। इस मुहिम की घोषणा करते हुए दिपके ने कहा कि इसका मु य उद्देश्य आम लोगों की समस्याओं को समझना और उनके लिए काम करना होगा। बकौल, दिपके इस अभियान का सबसे पहला ध्यान शिक्षा क्षेत्र पर होगा, धीरे-धीरे इसे अन्य मुद्दों पर भी केंद्रित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा पर सबसे पहले ध्यान इसलिए दिया गया है क्योंकि स्कूल, कॉलेज और कोचिंग की बढ़ती फीस की वजह से कई परिवार अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा उपलब्ध नहीं करवा पाते। उन्होंने कहा, देश की शिक्षा व्यवस्था में सुधार हमारा पहला मुद्दा होगा। इस पर हमें काम करना है। हमारा मानना है कि देश में शिक्षा महंगी हो गई है। पहली कक्षा के लिए सालाना फीस 1 लाख रुपए से लेकर 2 लाख रुपए के बीच है। इसके अलावा कई जगह डोनेशन भी चलता है। दिपके ने सवाल उठाया कि देश में लोगों की आय इतनी कम है। आखिर वह कैसे अपने बच्चों को इतनी फीस देकर पढ़ा पाएंगे ? कॉलेज और कोचिंगों की महंगी फीस कई परिवारों को कर्ज के जाल में फंसा रही है। उन्होंने जोर देकर कहा कि कॉकरोच पार्टी छात्रों के और तमाम परिवारों के इस आर्थिक बोझ को कम करना चाहती है। अभिजीत दिपके ने भीम राव अंबेडकर का जिक्र करते हुए कहा कि शिक्षा पर सभी का अधिकार है। शिक्षा को सभी के लिए उपलब्ध होना चाहिए। लेकिन आज के समय में शिक्षा केवल एक मुनाफे का धंधा बन चुकी है। अभिजीत दिपके की ये बातें भारतीय राजनीति के लिए देजा वू पल समान लग रही हैं। फ्रेंच भाषा से लिए गए इस शब्द का अर्थ है पहले से देखा या महसूस किया हुआ। ज्यादा नहीं बस डेढ़ दशक पहले 26 नवंबर 2012 को आम आदमी पार्टी बनी थी। अरविंद केजरीवाल की बनाई यह पार्टी इंडिया अगेंस्ट करप्शन नाम के अभियान से ही निकली थी। आम आदमी पार्टी ने भी जनता पर पकड़ बनाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, पानी जैसे बुनियादी मुद्दों पर ही जोर दिया। और इसमें कोई संदेह नहीं कि जब दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार बनी तो चाहे सरकारी स्कूल हों या मोहल्ला क्लिनिक की अवधारणा इनसे लाखों लोगों की जिंदगी में सहूलियत बढ़ी। दिल्ली के सरकारी स्कूलों में बहुत हद तक आप सरकार ने सुधार किया था। फरवरी 2020 में जब ट्रंप भारत के दौरे पर थे, तो अमेरिका की प्रथम महिला मेलानिया ट्रंप ने एक सरकारी स्कूल का दौरा भी किया था। आम आदमी पार्टी ने अपने गठन के वक्त यही दावा किया था कि वह राजनीति में बदलाव करेगी और मौजूदा चलन से हटकर काम करके दिखाएगी। लेकिन राजनैतिक मजबूरी कहें या महत्वाकांक्षा, आम आदमी पार्टी भी अब उसी रवैये पर चलती है जैसे बाकी राजनैतिक दल। भाजपा के विरोध में आम आदमी पार्टी ने इंडिया गठबंधन का हिस्सा बनना मंजूर किया और उसी कांग्रेस से हाथ मिलाया, जिसकी मुखालफत वो करती रही है। लेकिन अब उसे इस गठबंधन में सहजता महसूस नहीं हुई तो वह अलग भी हो गई है। भविष्य में आम आदमी पार्टी क्या अकेले ही रहेगी या फिर किसी गठबंधन का हिस्सा बनेगी यह कहना कठिन है। क्या बोलती पब्लिक में जिस पब्लिक पर जोर दिया जा रहा है, वह आम आदमी ही है। बेशक अभिजीत दिपके ने अभी कहा है कि वह राजनीतिक पार्टी नहीं बनेंगे। बल्कि स्थानीय स्तर पर सुधार करने के लिए एक %प्रेशर ग्रुप% यानी दबाव बनाने वाले समूह की तरह काम करेंगे।

2026-हिंदू राष्ट्र की धमक!

राजेंद्र शर्मा

सीधी-सरल भाषा में इस पूरी शाब्दिक कसरत का अर्थ यही है कि मोहन भागवत का संगठन, यह जानते-समझते हुए भी कि यह भारत के वर्तमान संविधान के खिलाफ है, भारत को हिंदू राष्ट्र मानता है और सबसे मनवाने के लिए यानी हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए, काम कर रहा है और करता रहेगा। इसके लिए वह संविधान के ही बदले जाने के भरोसे बैठा तो नहीं रहेगा। हां! संविधान भी अगर उसकी भाषा बोलने लगे तब तो कहना ही क्या? मोदी-शाह ही भाजपा के लिए संघ की सौवीं सालगिरह पर भागवत ने अगला टास्क तय कर दिया है—संविधान बदलकर कर उसमें वह शब्द (हिंदू राष्ट्र) जुड़वाना

आरएसएस के सौ साल पूरे होने के मौके पर देश के अलग-अलग हिस्सों में आयोजित की जा रही व्या यान शृंखला में उसके सर-संघचालक, मोहन भागवत 2025 के आखिरी पखवाड़े में कोलकाता में बोल रहे थे। यहां बोलते हुए भागवत ने कुछ ऐसा कहा जो पहली नजर में बहुतों को आरएसएस की जानी-पहचानी ल फाजी का दोहराव लग सकता है, लेकिन थोड़ा गौर से देखते ही उसकी खतरनाक अर्थध्वनियां सुनाई देने लगती हैं। प्रकटतः तो भागवत आरएसएस का जाना-पहचाना दावा ही दुहरा रहे थे कि भारत एक हिंदू राष्ट्र था, है और रहेगा! %जब तक इस देश में एक व्यक्ति भी भारतीय पूर्वजों की गौरवशाली विरासत में विश्वास करता है, तब तक भारत एक हिंदू राष्ट्र है%, आदि। लेकिन, इस व्या यान में आरएसएस के मुखिया संभवतः पहली बार, भारत के हिंदू राष्ट्र होने के अपने दावे को, उस भारतीय संविधान के ही सामने खड़ा कर देते हैं, जो स्पष्ट रूप से भारत के एक धर्मनिरपेक्ष, बहुलवादी राष्ट्र होने की संकल्पना पर आधारित है। बेशक, भागवत हिंदू राष्ट्र के अपने दावे को, उपनिवेशविरोधी राष्ट्रवादी संघर्ष की कोख से निकले और आंबेडकर की कलम के माध्यम से, सामाजिक बराबरी और भाईचारे की रौशनाई से लिखे गए, संविधान के साथ सीधे टकराने से बचाकर निकालने की कोशिश करने की चतुराई भी बरतते हैं और प्रकटतः यह दावा करने पर खुद को रोक भी लेते हैं कि इसके लिए संविधान की मंजूरी की जरूरत नहीं है कि हिंदुस्तान एक हिंदू राष्ट्र है। फिर भी वह संविधान की मंजूरी होने या होने से फर्क ही नहीं पड़ने की इस झूठी मुद्रा पर ही नहीं रुक रहे हैं। वह खुलेआम राजनीति के मैदान में उतरते हुए, इसकी अनिष्टकर संभावना की ओर भी इशारा करते हैं कि अगर संसद कभी संविधान में संशोधन कर वह शब्द जोड़ने का फैसला करती है...; वह शब्द यानी हिंदू राष्ट्र। यह दूसरी बात है कि इस संभावना के जिक्र के साथ भी वह यह जोड़ना नहीं भूलते हैं कि संसद अगर ऐसा %न भी करे, तो हमें उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हमें उस शब्द की परवाह नहीं है, क्योंकि हम हिंदू हैं और हमारा राष्ट्र हिंदू राष्ट्र है। यही सच्चाई है।

सीधी-सरल भाषा में इस पूरी शाब्दिक कसरत का अर्थ यही है कि मोहन भागवत का संगठन, यह जानते-समझते हुए भी कि यह भारत के वर्तमान संविधान के खिलाफ है, भारत को हिंदू राष्ट्र मानता है और सबसे मनवाने के लिए यानी हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए, काम कर रहा है और करता रहेगा। इसके लिए वह संविधान के ही बदले जाने के भरोसे बैठा तो नहीं रहेगा। हां! संविधान भी अगर उसकी भाषा बोलने लगे तब तो कहना ही क्या? मोदी-शाह ही भाजपा के लिए संघ की सौवीं सालगिरह पर भागवत ने अगला टास्क तय कर दिया है—संविधान बदलकर कर उसमें वह शब्द (हिंदू राष्ट्र) जुड़वाना!

और साल के उसी अंतिम पखवाड़े में मोदी-शाह की हुकूमत क्या कर रही थी? देश की आबादी का कुल 2.3 फीसदी हिस्सा बनाने वाले ईसाइयों के सबसे बड़े धार्मिक त्यौहार पर, जो वैसे भी सबसे प्रेम तथा सौहार्द व मेल-जोल के संदेश के लिए ही जाना जाता रहा है, मोदी-शाह की भाजपा समेत, समूचे आरएसएस विचार परिवार के सरासर अकारण हमलों को, सामान्य बनाने की कोशिश की जा रही थी। भागवत के उपदेश की तरह, इस मामले में मोदी-शाह की हुकूमत दुहरी चाल चल रही थी। एक ओर संघ विचार परिवार के हिस्से के तौर पर, सिर्फ बजरंग दल, विहिप आदि जैसे कथित रूप से हाशिए के संगठन ही नहीं, केंद्र में मोदीशाही से लेकर, उत्तर प्रदेश में योगीशाही तक, धर्मनिरपेक्ष संविधान के अंतर्गत चुनी गयी भाजपायी सरकारें तक, एक त्यौहार के रूप में क्रिसमस को ही नकारने में लगी हुई थीं। केंद्र ने 25 दिसंबर को क्रिसमस की जगह तथाकथित सुशासन दिवस मनाने से जो शुरूआत की थी, उसे इस बार उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड जैसे भाजपा-शासित राज्यों में क्रिसमस की छुट्टी ही रद्द करने तक पहुंचा दिया। वहां इस मौके पर व्यापक स्तर पर अटलबिहारी वाजपेयी का जन्म दिन मनाया गया, जिसके लिए बच्चों को खासतौर पर स्कूलों में बुलाया गया। इस मौके पर स्वयं प्रधानमंत्री ने लखनऊ में एक विशाल कार्यक्रम में 230 करोड़ रु. की लागत से बने राष्ट्रीय प्रेरणा स्थल और हार्मनी पार्क का उद्घाटन किया। अपने हिंदू राज की, वाजपेयी के जन्म दिन से क्रिसमस को प्रतिस्थापित करने की इस तरह की कोशिशों से प्रेरणा पाकर, भाजपा समेत संघ परिवार के विभिन्न संगठनों ने देश के विभिन्न हिस्सों में, जाहिर है कि ज्यादातर भाजपा-शासित राज्यों में, क्रिसमस के आयोजनों को अभूतपूर्व हमलों और तोड़-फोड़ का निशाना बनाया। असम, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, दिल्ली, ओडिशा, राजस्थान, उत्तराखंड तथा कुछ अन्य राज्यों में, क्रिसमस की पूर्व-संध्या से लेकर क्रिसमस के दिन तक, हमले की ऐसी घटनाएं घट ही रही थीं। शापिंग मॉल, बाजार आदि, सार्वजनिक स्थलों पर क्रिसमस की सजावट पर तोड़-फोड़ के जरिए विशेष रूप से यह व्यापक संदेश देने की कोशिश की गयी कि हिंदू राज में, गैर-हिंदू अपने धार्मिक त्यौहार मनाते, रीति-रिवाजों का पालन करते, कर्म-कांड करते, सार्वजनिक रूप से दिखाई नहीं देने चाहिए। अल्पसं यक हों भी तो अदृश्य होकर रहें, दिखाई सिर्फ हिंदू देने चाहिए। आरएसएस के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतकार माने जाने वाले, गोलवालकर ने हिंदू राष्ट्र में रहने वाले अल्पसं यकों के लिए, ठीक यही %%मर्यादा%% तय की है।

बेशक, क्रिसमस पर हमले की ऐसी घटनाएं पहली बार नहीं हो रही थीं। पहले कभी-कभार, स्थानीय कारणों से होने वाली इस तरह की घटनाएं, शासन से एक प्रकार से खुली छूट बल्कि आशीर्वाद हासिल होने के कारण, मोदीशाही में लगातार और तेजी से बढ़ती गयी हैं। इस क्रिसमस पर इन घटनाओं में करीब छः गुनी बढ़ोतरी होने की खबर है। संघ परिवार की दोहरी चाल के अनुरूप, खुद प्रधानमंत्री, उत्तर प्रदेश में औपचारिक रूप से क्रिसमस की जगह वाजपेयी के जन्म दिन को बैठाने के कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए रवाना होने से पहले, राजधानी दिल्ली में बड़े भक्तिभाव से एक गिरजे में जाकर क्रिसमस की विशेष प्रार्थना में शामिल हुए। उन्होंने अपने क्रिसमस के इस आयोजन में शामिल होने का वीडियो भी सोशल मीडिया पर डाला और प्रेम व सद्भाव को क्रिसमस का मूल संदेश बताते हुए, सार्वजनिक रूप से क्रिसमस की शुभकामनाएं भी दीं। दूसरी ओर, अपने संघ परिवारियों के हमलों से क्रिसमस और ईसाइयों को बचाने के लिए खुद उन्होंने और उनके राज ने, कुछ भी नहीं किया। यहां तक कि न तो प्रधानमंत्री को इसकी अपील तक करना गवारा हुआ कि ऐसे हमले नहीं होने चाहिए और न उनके नंबर दो, गृहमंत्री को ऐसी गुंडागर्दी करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की धमकी तक देना गवारा हुआ। हैरानी की बात नहीं है कि इन हमलों के लिए, भाजपा-शासित राज्य में पुलिस ने शायद ही किसी पर कोई कार्रवाई की है! जब लक्ष्य हिंदू राज में अल्पसं यकों को ही अदृश्य करना है, उन पर हमलों को कैसे दर्ज होने दिया जा सकता है। गोलवालकर की कल्पना के हिंदू राष्ट्र की स्थापना का अ यास जारी है।

और जैसे हिंदू राष्ट्र के लाए जाने के इसी अ यास के आर्थिक-सामाजिक घटक के रूप में, दिसंबर के उसी आखिरी पखवाड़े में, ग्रामीण गरीबों के लिए न्यूनतम शारीरिक मजदूरी की गारंटी करने वाले मनरेगा कानून को खत्म करने और उसकी जगह पर कथित वीबी-जी राम जी योजना को बैठाए जाने पर, संसद से और फिर राष्ट्रपति से ताबड़तोड़ मोहर लगवायी गयी। कई अर्थों में यह संसदीय बहुमत की तानाशाही के सहारे, किसानों के हितों पर चोट करने वाले और मौजूदा हिंदुत्ववादी निजाम को सहारा देने वाले कारपोरेटों के स्वार्थ साधने वाले, तीन कृषि कानूनों के मामले में जो किया गया था, उसी की पुनरावृत्ति है। इस बार प्रत्यक्ष रूप से स्वार्थ साधे जा रहे हैं, बड़े भूस्वामियों के, जो ग्रामीण क्षेत्र में मौजूदा निजाम के समर्थन की रीढ़ हैं और जिनके लिए यह बदलाव, सस्ते मजदूर मुहैया कराने का साधन बनेगा। इससे पहले, श्रम कानूनों को एक प्रकार से ध्वस्त ही करने वाली चार श्रम संहिताओं को अधिसूचित करने के जरिए, कारपोरेटों के स्वार्थ साधने का रास्ता खोला ही जा चुका था। प्रधानमंत्री खुद इसी को नयी पीढ़ी के तथाकथित सुधारों की एक्सप्रेस बताकर, खुद अपनी पीठ ठोक रहे हैं!

इस तरह, 2025 के आखिर तक, न सिर्फ हिंदू राज के अमल को आगे बढ़ाने का रास्ता बनाया जा चुका है बल्कि उसकी सेनाओं को रसद-पानी मुहैया कराते रहने के लिए, बड़े धनपतियों की तिजोरियों तक पहुंच का भी पु ता इंतजाम किया जा चुका है। रही-सही कसर, चुनाव आयोग से लेकर, उपरली अदालतों तक, उन सभी संस्थाओं पर मौजूदा निजाम के कब्जे ने पूरी कर दी है, जिन पर देश के निजाम का संविधान और कानून के हिसाब से चलना सुनिश्चित करने की जि मेदारी थी। जब ईमानदारी से चुनाव होने तक का भरोसा नहीं रहे, तो संविधान भी कब तक %%वह शब्द%% जोड़े जाने से बचा रह पाएगा। वैसे भागवत कह ही चुके हैं कि उनका हिंदू राष्ट्र स्थापित करना, संविधान में %%वह शब्द%% जोड़े जाने के आसरे नहीं है। प्रधानमंत्री के पद को मु य पुजारी के पद में और प्रधानमंत्री कार्यालय परिसर को, सेवा तीर्थ में बदला ही जा चुका है। हिंदू राष्ट्र का निर्माण, चालू आहे! तो क्या, 2026 के हिस्से में सिर्फ नंगई से सामने आते हिंदू राष्ट्र की चकाचौंध अंधेरा है? हर्गिज नहीं। हरेक नंगई, असलियत को पहचानना आसान भी तो बनाती है। मजदूर, किसान, खेत मजदूर, दलित, पिछड़े, महिलाएं, नौजवान, अल्पसं यक; विशाल कतारें हैं जो दुश्मन की बेहतर पहचान के साथ अपने हक-हुकूक के लिए खड़ी होंगी। जब दरिया झूम के उट्ठेंगे, हिंदू, खतरे में हैं के पर्दों से न रोके जाएंगे!

उम्मीद के बीज बोने वाले आदिवासी

बाबा मायाराम

मैं कई बार इस अनोखी हरियाली यात्रा को देखने-समझने गया हूं। एक बार मुझे श्रमिक आदिवासी संगठन के कार्यकर्ता राजेन्द्र गढ़वाल बैतूल जिले के करीब एक दर्जन गांवों और कस्बों में ले गए थे, ये गांव शाहपुर व चिचौली विकासखंड के अंतर्गत आते हैं। पाहावाड़ी, टेटरमाल, डुमका, चूनाहजूरी, पीपलबर्रा, बोड़, चीरापाटला, चिचौली, शाहपुर गया।

मौजूदा दौर में देश-दुनिया में जलवायु बदलाव ज्वलंत समस्या मानी जा रही है। यह एक वैश्विक समस्या है, पर हम इसे कम करने के लिए स्थानीय स्तर पर कुछ काम कर सकते हैं। इसके साथ ही हमारे देश में बेरोजगारी भी बड़ी समस्या है। इन दोनों के मद्देनजर मध्यप्रदेश के बैतूल जिले में आदिवासियों ने पिछले डेढ़ दशक से पेड़ लगाने की पहल की है। आज इस कॉलम में इस पर चर्चा करना चाहूंगा, जिससे पर्यावरण के साथ आजीविका का कैसे संरक्षण किया जा सकता है, इसे समझा जा सके। पेड़ ही भविष्य की उमीद हैं। समाजवादी जन परिषद और श्रमिक आदिवासी संगठन के बैनर तले यह अभियान करीब डेढ़ दशक से चल रहा है। इसे हरियाली यात्रा का नाम दिया गया है। बरसों की मेहनत अब रंग लाने लगी है। आदिवासियों के द्वारा रोपे गए पौधे अब फल देने लगे हैं। इन फलों को आपस में बांटकर भी पेड़ लगाने का संदेश दिया जाता है। आदिवासियों ने अपने घर के आसपास, खाली पड़ी जमीन पर, खेतों में और जंगल में फलदार पेड़ लगाए हैं। श्रमिक आदिवासी संगठन के राजेन्द्र गढ़वाल कहते हैं कि फलदार पेड़ हर दृष्टि से उपयोगी हैं। इससे हरियाली बढ़ेगी, कुपोषण दूर होगा, जैव विविधता बचेगी और पर्यावरण भी बचेगा। मिट्टी का कटाव रूकेगा और पानी का संचय होगा। पेड़ों पर पक्षी आएंगे, वे कीट नियंत्रण करेंगे। आदिवासियों के भोजन में पोषक तत्व होंगे, उनका स्वास्थ्य ठीक होगा और इन फलों की बिक्री से आमदनी भी बढ़ेगी। वे आगे बताते हैं कि इस साल भी यह अभियान चलाया गया। जुलाई से अगस्त तक यह अभियान चलाया गया। इसके तहत् गांव, कस्बों और बैतूल जैसे शहर में पेड़ों के साथ रैली निकालकर यह अभियान चलाया गया। रैली में आदिवासी पौधे सजाकर, ढोल-टिमकी के साथ गीत व नारों व पर्चे बांटकर पेड़ लगाने का संदेश देते हैं। उन्होंने बताया कि पेड़ लगाने की मुहिम की तैयारी गर्मी के मौसम से ही शुरू हो जाती है। बीजों को एकत्र करना, उनकी साफ-सफाई करना, उनका रख-रखाव करना और पौधे तैयार करना और फिर उन्हें लगाना।

श्रमिक आदिवासी संगठन के कार्यकर्ता राजेन्द्र गढ़वाल बताते हैं कि यहां पहले अच्छा जंगल हुआ करता था। वह आदिवासियों के भूख और जीवन का साथी था। यहां से उन्हें कई तरह के कंद मूल, मशरूम, शहद, अचार, महुआ और हरी पत्तीदार भाजियां मिलती थीं। जंगल ही उनका पालनहार था। अब वैसा जंगल नहीं रहा। गांवों में रोजगार भी नहीं है।

मैं कई बार इस अनोखी हरियाली यात्रा को देखने-समझने गया हूं। एक बार मुझे श्रमिक आदिवासी संगठन के कार्यकर्ता राजेन्द्र गढ़वाल बैतूल जिले के करीब एक दर्जन गांवों और कस्बों में ले गए थे, ये गांव शाहपुर व चिचौली विकासखंड के अंतर्गत आते हैं। पाहावाड़ी, टेटरमाल, डुमका, चूनाहजूरी, पीपलबर्रा, बोड़, चीरापाटला, चिचौली, शाहपुर गया।

बैतूल जिले का यह इलाका आदिवासी बहुल है। यहां गोंड-कोरकू आदिवासी रहते हैं। खेती में मक्का ही मु य फसल है। जमीन ऊंची-नीची व हल्की है। सिंचित जमीन नहीं है। आदिवासियों का जीवन जंगल पर ही निर्भर है। वे बूढ़ादेव की पूजा करते हैं। यहां कभी आदिवासियों का राज था। पहाड़ों पर उनके टूटे-फूटे किले उनकी याद दिलाते हैं। लेकिन पहले जैसा जंगल भी अब नहीं रहा। इसलिए, लोगों को मजबूर होकर रोजगार के लिए पलायन करना पड़ता है। हरियाली अभियान के तहत् कटहल, आम, बादाम, जाम, नींबू, मौसंबी, संतरा, रीठा, मुनगा, अनार, आंवला, बील, आचार, जामुन,काजू, छीताफल, बेर इत्यादि कई फलदार पेड़ लगाए जा रहे हैं। ग्राम बोड़ के कुंवर सिंह और समोती ने अपने खेत के पेड़ दिखाए।

इस पूरे अभियान से कुछ बातें समझी जा सकती हैं। आज के जलवायु बदलाव के दौर में खेती की सोच बदलनी होगी। रासायनिक और मशीनी खेती में ठहराव आ चुका है। वृक्षों के साथ खेती का तालमेल बिठाना होगा। पेड़ों व मौसमी फसलों की मिली-जुली खेती करनी होगी। पहले ऐसा ही था। खेतों में महुआ, आम और आंवले जैसे कई तरह के पेड़ थे। महुआ खाते थे। उसके कई तरह के व्यंजन व भूंजकर खाया जाता था। केवल वार्षिक फसलों से लोगों की गुजर नहीं होगी। आज बहुत लागत लगाने और मेहनत करने के बावजूद किसानी घाटे का सौदा है। किसान आत्महत्या कर रहे है। फिर अधिक रासायनिक व कीटनाशकों के उपयोग से भूजल जहरीला हो रहा है। खासतौर से कम उपजाऊ वाले इलाकों में तो और भी मुश्किल है।

इस दृष्टि से भी हरियाली अभियान उपयोगी है। चाहे भले ही अच्छी उपजाऊ वाले खेतों में हम वार्षिक व मौसमी खेती करते रहें, लेकिन कम पानी वाली व अपेक्षाकृत कम उपजाऊ ढोंगा (ऊंची-नीची) टीले वाली जमीनों में पेड़ लगाए जा सकते हैं। फिर इन पेड़ों का जमीन में नमी बनाए रखने में प्रमुख योगदान होता है। पेड़ों से गिरी पत्तियां व टहनियां नमी को बचाती हैं, साथ ही जैव खाद बनाती हैं। पेड़ों की जड़ें गहरी होती हैं, वे पोषक तत्वों को बांधे रखती हैं। भोजन में फलों के शामिल होने से स्वस्थ रहने में मदद मिलती है। कुपोषण तो दूर होता ही है, भोजन की गुणवत्ता भी बढ़ती है। इनमें पोषक तत्व तो होते ही हैं, रेशा अधिक होने से वे कई बीमारियों से बचाते हैं। पेड़ों से ईंधन के लिए लकड़ियां मिलती हैं। तापमान को पेड़ नियंत्रित करते हैं। हवा देते हैं। कार्बन को सोखते हैं।

जिन इलाकों में वर्षा का कोई भरोसा नहीं है, मौसम की अनिश्चितता है, जो कि बढ़ रही है, उन इलाकों में खेतों में फलदार पेड़ होना, खाद्य सुरक्षा के लिए बहुत उपयोगी होगा। और इनके अतिरिक्त होने पर कुछ हद आर्थिक सुरक्षा होती है। धरती पर हरियाली चादर कई तरह से उपयोगी व सार्थक है।

इस सबके साथ मनुष्य और प्रकृति के बीच टूटता रिश्ता फिर से जुड़ेगा। मनुष्य ने प्रकृति पर आधिपत्य की सोच अपनाई है, उसी का परिणाम है आज का पर्यावरण का संकट। संसाधनों के बेजा दोहन की होड़। हरियाली अभियान जैसी पहल ने मनुष्य और प्रकृति के सहअस्तित्व की राह दिखाई है, जो आज पर्यावरण के संकट के हल के साथ मनुष्य के अस्तित्व के लिए भी बहुत जरूरी है। फिर स्थानीय आदिवासियों के सहयोग से जंगल व पर्यावरण बचाए जा सकते हैं। पेड़ लगाने के इस काम में सरकार को दिलचस्पी लेना चाहिए और इस अनोखे अभियान में सहयोग करना चाहिए ताकि इसे और बेहतर ढंग से किया जा सकता है। इस पूरे अभियान से बहुत कुछ सीखा जा सकता है, इसका अनुकरण किया जा सकता है। लेकिन क्या नए साल में इस दिशा में कुछ कर सकते हैं ?

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

विविध समाचार

एमबीए करने रूस गए बेटे का ताबूत में लौटा शव, दलालों ने ऐसे धकेला था मौत के मुंह में

रेवाड़ी। गुरुग्राम से सटे हरियाणा के रेवाड़ी जिले के काठुवास गांव में शुक्रवार को चीख–पुकार मच गई। जिस बेटे को पिता ने अपनी जिंदगी भर की गाढ़ी कमाई लगाकर सुनहरे भविष्य के लिए रूस भेजा था, उसका शव जब लकड़ी के ताबूत में लिपटकर गांव पहुंचा तो हर आंख नम हो गई। 22 वर्षीय अंशु रूस में एमबीए की पढ़ाई करने गया था, लेकिन दलालों के धोखे का शिकार होकर वह रूस–यूक्रेन युद्ध में रूसी सेना की तरफ से लड़ने को मजबूर हो गया और वहीं मौत के मुंह में समा गया। अंशु का शव जब श्मशान घाट पहुंचा, तो लकड़ी के भारी ताबूत को खोलने के लिए कटर मशीन का इस्तेमाल करना पड़ा। ताबूत खुलते ही अंदर का नजारा देखकर परिवार वालों का कलेजा फट गया। बॉक्स में अंशु के शव के साथ उसकी

रूसी सेना की वर्दी और जूते भी भेजे गए थे। नम आंखों और भारी मन से बड़े भाई मोहित ने अपने लाडले छोटे भाई की चिता को मुखाग्नि दी। ग्रामीणों में इस घटना को लेकर भारी रोष है। लोगों का साफ कहना है कि यह कोई सामान्य हादसा नहीं है, बल्कि उन लालची दलालों की रची गई खौफनाक साजिश है जिन्होंने शिक्षा के नाम पर एक होनहार छात्र को मौत के मोर्चे पर झोंक दिया। परिवहन विभाग में कार्यरत अंशु के पिता राकेश कुमार ने बताया कि उनका बेटा बीए पास करने के बाद एमबीए करने का सपना लेकर 30 अप्रैल 2025 को स्टडी वीजा पर रूस गया था। वहां उसने कुछ महीने कॉलेज में पढ़ाई भी की, लेकिन इसके बाद वह शातिर दलालों के जाल में फंस गया। दलालों ने अंशु की पढ़ाई छुड़वाकर सितंबर 2025 में उसे जबरदस्ती रूसी सेना में भर्ती करा दिया। अंशु ने आखिरी बार 18 अक्टूबर 2025 को घर पर बात की थी। उस वक्त उसने अपने पिता को बताया था कि उसे यूक्रेन युद्ध की फर्स्ट लाइन (मौत के मोर्चे) में भेजा जा रहा है और अब कुछ दिनों तक उसकी बात नहीं हो पाएगी। परिवार को इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि फोन पर हुई उस आखिरी बातचीत के कुछ समय बाद ही अंशु की मौत हो चुकी थी। परिजन करीब छह महीने तक अपने बेटे की राह देखते रहे। इस बीच 2 अप्रैल 2026 को परिवार ने देश के विदेश मंत्री से मुलाकात कर मामले की जानकारी दी। इसके ठीक दो दिन बाद, 4 अप्रैल को रूस के मॉस्को से पिता राकेश कुमार के पास एक मनहूस फोन आया। उन्हें बताया गया कि उनके बेटे की मौत हो चुकी है और शव मिलने के बाद उसे भारत भेजने में 10 से 15 दिन का समय लगेगा। 16 अप्रैल को सूचना मिली कि शव दिल्ली एयरपोर्ट आ रहा है, जिसके बाद शुक्रवार सुबह शव लेने के बाद गांव के श्मशान घाट में उसका अंतिम संस्कार कर दिया गया। तीन भाई–बहनों में सबसे छोटा अंशु पूरे घर का लाडला था। पिता राकेश कुमार की पत्नी का काफी समय पहले ही देहांत हो चुका था, ऐसे में पिता ने ही अपनी सारी जमा–पूंजी लगाकर बेटे को बड़ा आदमी बनने के लिए विदेश भेजा था। आज उस घर में सिर्फ अंशु की यादें और रूस से आया उसका ताबूत ही बचा है। इस दर्दनाक घटना के बाद काठुवास के ग्रामीणों ने सरकार से मांग की है कि मासूम युवाओं को पढ़ाई के बहाने युद्ध में धकेलने वाले दलालों के खिलाफ सख्त से सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए। खौफ की बात यह भी है कि रूस गए हरियाणा के सात अन्य युवक अभी भी लापता बताए जा रहे हैं, जिनकी सलामती को लेकर उनके परिवार खौफ में जी रहे हैं।

2 भाई, 1 पत्नी और अब गूंजी किलकारी... आखिर कौन कहलाएगा इस बच्ची का पिता?

सिरमौर। हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले के शिलाई क्षेत्र से एक ऐसी अनोखी शादी की चर्चा एक बार फिर तेज हो गई है, जिसने सोशल मीडिया पर हलचल मचा दी है। यहां के एक गांव में रहने वाले दो सगे भाइयों, कपिल और प्रदीप, ने स्थानीय परंपराओं का पालन करते हुए बीते साल जुलाई 2025 में एक ही महिला सुनीता के साथ सात फेरे लिए थे। इस शादी के करीब 10 महीने बाद अब इस परिवार में एक नन्हीं परी की किलकारी गूंजी है। सुनीता ने एक प्यारी सी बच्ची को जन्म दिया है, जिसके बाद से ही परिवार को लोगों की बधाइयां मिल रही हैं, लेकिन साथ ही एक ऐसा सवाल भी उठ खड़ा हुआ है जिसने इंटरनेट पर सबको सोचने पर मजबूर कर दिया है। सोशल मीडिया से लेकर आम लोगों के बीच सबसे ज्यादा चर्चा और कौतूहल इसी बात को लेकर है कि इस बच्ची का 'वास्तविक पिता' किसे माना जाएगा और सरकारी दस्तावेजों या जन्म प्रमाण पत्र (बर्थ सर्टिफिकेट) में किस भाई का नाम दर्ज होगा। आम लोगों के लिए यह उलझन भले ही बड़ी हो, लेकिन इस इलाके की सदियों पुरानी परंपरा के पास इसका सीधा जवाब है। स्थानीय मान्यताओं और सामाजिक नियमों के अनुसार, परिवार के बड़े भाई को ही इस नन्हीं बच्ची का आधिकारिक पिता माना जाएगा। सुनने में भले ही यह आधुनिक समाज को अजीब लगे, लेकिन पहाड़ी इलाकों में इस तरह की शादियों को स्थानीय स्तर पर 'फ्रेटर्नल पॉलीएंड्री' (एक महिला का कई भाइयों से विवाह) कहा जाता है। जानकारों के मुताबिक, दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में यह परंपरा सदियों से चली आ रही है। इसके पीछे का मुख्य उद्देश्य परिवार की खेती योग्य सीमित जमीन और संपत्ति के बंटवारे को रोकना तथा पूरे कुनबे को एक साथ मजबूती से जोड़े रखना रहा है। भारतीय कानून में इस तरह के बहुविवाह या बहुपति प्रथा को कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं है। यही वजह है कि ऐसे मामलों में कागजी कार्रवाई और आधिकारिक दस्तावेजों के लिए बड़े भाई को ही महिला का कानूनी पति माना जाता है। इसी आधार पर बच्चों के कागजातों में भी बड़े भाई का ही नाम पिता के तौर पर दर्ज होता है, भले ही बच्चे का बायोलॉजिकल पिता कोई भी हो। इस अनोखे वैवाहिक रिश्ते में पत्नी दोनों भाइयों के साथ एक ही छत के नीचे रहती है और यह फैसला पूरी तरह से महिला का होता है कि वह कब किसके साथ समय बिताएगी। इस दिलचस्प और प्राचीन प्रथा की गहराई को समझने के लिए हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री वाईएस परमार ने साल 1975 में 'बहुपति प्रथा' पर एक विस्तार से किताब भी लिखी थी, जिसमें पहाड़ों के इस अनोखे सामाजिक ताने–बाने की पूरी जानकारी दी गई है।

डिप्टी कमिश्नर वरजीत वालिया ने जालंधर के लिए प्रमुख विकास प्राथमिकताओं की रूपरेखा पर डाला प्रकाश

जालंधर। डिप्टी कमिश्नर वरजीत वालिया ने जालंधर जिले को विकास की दृष्टि से एक प्रगतिशील जिले में बदलने के लिए अपनी प्रमुख प्राथमिकताओं की रूपरेखा साझा की। आज यहां जिला प्रशासकीय कॉम्प्लेक्स में स्थानीय मीडिया से बातचीत करते हुए डिप्टी कमिश्नर ने कृषि, बुनियादी ढांचे और बेहतर प्रशासन पर केंद्रित व्यापक रणनीति पर प्रकाश डाला। डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि उनकी प्राथमिकता चल रहे गेहूं खरीद सीजन को उचित और निर्विघ्न ढंग से निपटाना है। उन्होंने बताया कि प्रशासन द्वारा पहले ही जिले भर की मंडियों में गेहूं की निर्विघ्न खरीद के लिए पुख्ता प्रबंध सुनिश्चित किए गए है। किसानों को पूर्ण सहयोग का भरोसा देते हुए श्री वालिया ने कहा कि किसानों को अपनी फसल की बिक्री में कोई दिक्कत पेश नहीं आने दी जाएगी। बुनियादी ढांचे के विकास को एक और प्रमुख प्राथमिकता बताते हुए उन्होंने कहा कि नागरिक सेवाओं को मजबूत करने और चल रहे विकास प्रोजेक्ट्स को तेजी से पूरा करने के लिए ठोस उपाय किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि जिले में बुनियादी ढांचे को मजबूत करने में कोई कसर बाकी नहीं रहने दी जाएगी। डिप्टी कमिश्नर ने पंजाब सरकार की लोक कल्याण योजनाओं को जमीन पर प्रभावी ढंग से लागू करने की महत्वता पर जोर दिया। उन्होंने विशेष तौर पर 'मुख्यमंत्री मांवां–धीया सत्कार' योजना और 'मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना' का जिक्र करते हुए कहा कि इन योजनाओं के तहत लाभार्थियों का उचित रजिस्ट्रेशन सुनिश्चित बनाया जाएगा। पारदर्शी और जवाबदेह प्रशासन उपलब्ध करवाने की प्रतिबद्धता दोहराते हुए डिप्टी कमिश्नर ने लोकतांत्रिक प्रक्रिया में मीडिया के चौथे स्तंभ के रूप में किए जा रहे योगदान की सराहना की, जिन्होंने समय पर निपटारे के लिए जन समस्याओं को उजागर करने में अहम भूमिका निभाई जा रही है।

सांस्कृतिक पुनर्जागरण के शाश्वत प्रतीक युगपुरूष आद्य शंकराचार्य

भारतीय वांग्मय के आकाश में आद्य गुरु शंकराचार्य एक ऐसे प्रदीप्त भास्कर हैं, जिन्होंने अल्पायु में ही अपनी मेधा से दिग्दिगंत को आलोकित किया। बैशाख शुक्ल चतुर्थीको उनका प्रादुर्भाव मात्र एक घटना नहीं, अपितु क्षरणोन्मुख सनातन धर्म के पुनरुत्थान का दैवीय अभियान था।शंकराचार्य का आध्यात्मिक दर्शन "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः"के सूत्र में समाहित है। उन्होंने उपनिषदों की दुरूह व्याख्याओं को प्रस्थानत्रयीपर भाष्य लिखकर तार्किक परिपक्वता प्रदान की। पौराणिक दृष्टि से वे भगवान शंकर के अंशावतार माने जाते हैं, जिन्होंने षण्मतकी स्थापना कर विभक्त शैव, वैष्णव और शाक्त मतों को एक ही अद्वैत धरातल पर प्रतिष्ठित किया। उनका दर्शन शुष्क बौद्धिकता नहीं, अपितु आत्मानुभूति का वह शिखर है जहां ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय का भेद तिरोहित हो जाता है।शंकराचार्य ने भारत की भौगोलिक सीमाओं को आध्यात्मिक सूत्र में पिरोने हेतु चर्तुदिक चार पीठों की स्थापना की– शृंगेरी, पुरी, द्वारका और ज्योतिर्मठ। यह मात्र धार्मिक केंद्र नहीं, अपितु भारत की सांस्कृतिक संप्रभुता के रक्षक स्तंभ थे। उन्होंने दशनामी संन्यासपद्धति का गठन कर बिखरे हुए साधु–संतों को एक अनुशासित व्यवस्था में आबद्ध किया, जिससे धर्म की रक्षा हेतु एक वैचारिक सेना तैयार हुई।यद्यपि शंकराचार्य प्रकांड पंडित थे, उनके सामाजिक विचार अत्यंत उदार और समतावादी थे। काशी के मणिकर्णिका घाट पर चांडालके रूप में साक्षात् शिव से संवाद कर उन्होंने यह सिद्ध किया कि ब्रह्मज्ञान जाति और वर्ण की सीमाओं से परे है। मनीषा पंचकम्इसका जीवंत प्रमाण है। उन्होंने शास्त्रार्थ की परंपरा को पुनर्जीवित कर हिंसा के स्थान पर संवाद और तर्क को सत्य अन्वेषण का माध्यम बनाया। आधुनिक ऐतिहासिक विमर्शों में उनके कालखंड को लेकर शोध निरंतर जारी हैं। केदारनाथ में उनकी समाधि का जीर्णोद्धार और देश भर के प्राचीन मंदिरों, यथा– बदरीनाथ, कामाख्या, और कांची में उनके द्वारा स्थापित श्रीचक्र एवं प्रतिमाएं उनके ऐतिहासिक अस्तित्व और प्रभाव की पुरातात्विक पुष्टि करती हैं। आदि गुरु द्वारा पुनर्जीवित किए गए तीर्थ आज भी भारत की अखंडता के जीवंत साक्ष्य हैं। शंकराचार्य का जीवन चरैवेति–चरैवेतिका साक्षात उदाहरण है। उन्होंने विखंडित समाज को एकता के सूत्र में पिरोया और ज्ञान के मरुस्थल में भक्ति एवं अद्वैत की मंदाकिनी प्रवाहित की। उनकी जयंती पर हमारा वास्तविक नमन उनके अद्वैतभाव को अपने आचरण में उतारना ही होगा।आचार्य शंकर ने केवल दार्शनिक एवं सांगठनिक नवोन्मेष संबंधी सिद्धांतों का प्रतिपादन नहीं किया, बल्कि उन सिद्धांतों के संरक्षण हेतु एक अभेद्य सांगठनिक ढांचे का निर्माण किया। उन्होंने संन्यास की बिखरी हुई परंपराओं को दशनामी (गिरि, पुरी, भारती, वन, अरण्य, पर्वत, सागर, तीर्थ, आश्रम और सरस्वती) के अंतर्गत वर्गीकृत कर उसे एक सुव्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया।यह वर्गीकरण केवल प्रतीकात्मक नहीं था, बल्कि इसके पीछे परिव्राजक (निरंतर भ्रमणशील संन्यासी) की संकल्पना थी। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि ज्ञान केवल हिमालय की गुफाओं या मठों तक सीमित न रहे, अपितु वन, पर्वत और तीर्थों के माध्यम से जन–सामान्य तक प्रवाहित होता रहे।इन दस नामों के माध्यम से उन्होंने भारत की संपूर्ण भौगोलिक संपदा को अध्यात्म से जोड़ दिया। यह विश्व का संभवतः पहला ऐसा सांगठनिक प्रयास था, जहां संन्यास को व्यक्तिगत मोक्ष के साथ–साथ लोक संग्रह (सामाजिक कल्याण) का उत्तरदायित्व सौंपा गया।भारतीय दर्शन में किसी भी मत को स्थापित मानने हेतु उपनिषद, ब्रह्मसूत्र और श्रीमद्भगवद्गीता (प्रस्थानत्रयी) पर भाष्य करना अनिवार्य था। आचार्य शंकर के भाष्य केवल व्याख्याएं नहीं, अपितु तार्किक क्रांति थे। यह राष्ट्र चेतना का आह्वान था।

उपनिषद भाष्य (श्रुति प्रस्थान) के माध्यम से आचार्य ने अविद्या के आवरण को हटाकर जीव और ब्रह्म की तात्विक एकता को सिद्ध किया। उन्होंने स्थापित किया कि ज्ञान कर्म का अंग नहीं, अपितु स्वतंत्र फलदायी है।ब्रह्मसूत्र भाष्य (शारीरिक मीमांसा) के माध्यम से उन्होंने तर्क और युक्ति के आधार पर द्वैतवादी मतों का खंडन किया। यह उनके बौद्धिक कौशल की पराकाष्ठा है, जहां वे अत्यंत सूक्ष्म सूत्रों की व्याख्या करते हुए चिन्मात्र सत्ता को प्रदीप्त करते हैं। शंकर ने गीता भाष्य के माध्यम से निष्काम कर्म को चित्त शुद्धि का साधन बताते हुए उसे ज्ञान की प्राप्ति का सोपान सिद्ध किया।प्रायः विद्वान शंकर को केवल निषेधात्मक (नेति–नेति) दार्शनिक मानते हैं, किंतु उनके भाष्यों का सूक्ष्म अवलोकन यह प्रकट करता है कि वे अस्वीकार नहीं बल्कि समावेश के पक्षधर थे। उन्होंने बौद्ध शून्यवाद की तार्किकता को तो स्वीकार किया, परंतु उसे उपनिषदों के पूर्णत्व(ब्रह्म) से मंडित कर दिया।आचार्य का संन्यास संप्रदाय कवच था और प्रस्थानत्रयी भाष्य प्रकाश। कवच ने सनातन संस्कृति की रक्षा की और प्रकाश ने भ्रांतियों के अंधकार को मिटाया। उनके भाष्यों में विद्यमान सत्य आज भी आधुनिक भौतिक विज्ञान के क्वांटम फील्ड थ्योरी जैसे सिद्धांतों को चुनौती देता प्रतीत होता है। आद्य गुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित चतुष्पीठ केवल मठ नहीं, बल्कि चेतना के केंद्र हैं। प्रत्येक पीठ को एक विशिष्ट वेद, एक महावाक्य और एक विशेष उत्तरदायित्व सौंपा गया, जो उनकी सूक्ष्म सांगठनिक दृष्टि को दर्शाता है।पूर्व के पुरी –गोवर्धन मठ) में ऋग्वेद की प्रधानता है। इसका महावाक्य प्रज्ञानं ब्रह्म (बोध ही ब्रह्म है) है। यह पीठ चेतना के शुद्ध स्वरूप को रेखांकित करती है।पश्चिम के द्वारका –शारदा मठ में सामवेद का वर्चस्व है। महावाक्य तत्त्वमसि (वह तुम ही हो) गुरु–शिष्य परंपरा के उपदेशात्मक पक्ष को पुष्ट करता है।उत्तर के बदरिकाश्रम –ज्योतिर्मठ में अथर्ववेद मुख्य है। महावाक्य अयमात्मा ब्रह्म (यह आत्मा ही ब्रह्म है) अंतर्मुखी साधना का प्रतीक है।दक्षिण के शृंगेरी –शारदा पीठ में यजुर्वेद का प्राधान्य है। महावाक्य अहं ब्रह्मास्मि (मैं ही ब्रह्म हूं) साधक की अंतिम अनुभूति का उद्घोष है।इन पीठों के माध्यम से आचार्य ने यह सुनिश्चित किया कि भारत का कोई भी कोना वेद–विहीन न रहे। गोत्र और संप्रदाय के विभाजन द्वारा उन्होंने संन्यासियों के कार्यक्षेत्र को स्पष्ट किया, जिससे सांस्कृतिक अतिक्रमण की संभावना समाप्त हो गई।आज का विज्ञान जहां पदार्थ की गहराइयों में उतरकर उसे ऊर्जा और अंततः एक क्षेत्र के रूप में देख रहा है, आचार्य शंकर ने सहस्राब्दियों पूर्व इसे माया और ब्रह्म के रूप में परिभाषित कर दिया था।क्वांटम सुपरपोजिशन भौतिकी कहती है कि जब तक पर्यवेक्षक न हो, कण की स्थिति अनिश्चित है। शंकराचार्य का मायावाद भी यही कहता है– संसार प्रतीत तो होता है (व्यावहारिक सत्ता), किन्तु परम सत्य (पारमार्थिक सत्ता) के धरातल पर उसकी स्वतंत्र सत्ता नहीं है।ब्रह्म वह अविनाशी तत्व है जो न घटता है, न बढ़ता है। विज्ञान के ऊर्जा का संरक्षण का सिद्धांत अद्वैत के पूर्णमदः पूर्णमिदम् का ही आधुनिक भौतिक अनुवाद है।वैज्ञानिक जिस एकीकृत क्षेत्र (थ्योरी ऑफ एवरीथिंग) की खोज में हैं, अद्वैत वेदान्त वह खोज पूरी कर चुका है। शंकर के अनुसार, विविधता केवल नाम और रूप की है, मूल तत्व चिदाकाश एक ही है। शंकराचार्य का दर्शन केवल मध्यकालीन समाधान नहीं था, बल्कि वह भविष्य का विज्ञान है। उनके पीठों ने जहाँ भारत को भौगोलिक सूत्र में बांधा, वहीं उनके अद्वैत दर्शन ने वैश्विक मेधा को वह तार्किक आधार दिया, जहां धर्म और विज्ञान का विरोध समाप्त होकर एक पूर्ण सत्य का उदय होता है।आद्य गुरु शंकराचार्य के स्तोत्र साहित्य (विशेषतः सौन्दर्य लहरी) में निहित तांत्रिक रहस्यों एवं समकालीन वैश्विक संकटों के निराकरण में अद्वैत की भूमिका, पराशक्ति का वांग्मय विग्रह एवं अद्वैत की वैश्विक उपादेयता पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि आचार्य शंकर अपने भाष्यों में तो कठोर तर्कवादी (शुष्क वेदान्ती) प्रतीत होते हैं, वहीं अपने स्तोत्र साहित्य में वे परम भावुक भक्त और उच्च कोटि के श्रीविद्या उपासक के रूप में उभरते हैं।सौन्दर्य लहरी के प्रथम श्लोक –शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुम्, में ही उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि शक्ति के बिना शिव स्पन्दनहीन (शववत) हैं। यह दर्शन का वह मौलिक विन्दु है जहां वेदान्त और तन्त्र का मिलन होता है। यहां माया केवल बंधन नहीं, बल्कि ललिता महात्रिपुरसुंदरी के रूप में सृजन की ईश्वरीय सामर्थ्य है।उनके स्तोत्रों में मूलाधार से सहस्रार तक के षट्चक्र भेदन का सूक्ष्म वर्णन मिलता है। यह सिद्ध करता है कि आचार्य के लिए ब्रह्म केवल बौद्धिक अवधारणा नहीं, बल्कि शरीर के भीतर अनुभूत होने वाली कुण्डलिनी शक्ति की ऊर्ध्वगति है। कुण्डलिनी योग का प्रतिपादन कर उन्होंने श्रीयंत्र (श्रीचक्र) के नौ चक्रों को ब्रह्मांड के नौ स्तरों का प्रतीक मानकर बाह्य और आंतरिक जगत का अभेद स्थापित किया। आज का विश्व विखंडन और पहचान के संकट से जूझ रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में अद्वैत दर्शन एक ग्लोबल एथिक्स (वैश्विक नीतिशास्त्र) प्रस्तुत करता है।

Printed, Published,Edited, & Owned by Prakash Kumar Dhal, Printed at Promodini Publication, Main road , Chhend colony , Rourkela-15 & Published at ECR-73, Chhend Colony, Rourkela-15, Editor : Prakash kumar Dhal, Email:kalingasamachar@gmail.com , Mob: 9439951525, Ph. 0661-2646999

ओडिशा समाचार

कलिंग समाचार

इफको पारादीप यूनिट में देशभक्ति के जोश के साथ मनाया गया 80वां स्वतंत्रता दिवस

पारादीप १६/०८ (संवाददाता): इफको पारादीप यूनिट में 80वां स्वतंत्रता दिवस बड़े जोश और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। इस समारोह में वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी, ऑफिसर्स एसोसिएशन और एज़्प्लॉइज यूनियन के सदस्य, इफको टाउनशिप के निवासी और इफको DAV पज़्लिक स्कूल के बच्चे शामिल हुए।

इस भव्य समारोह की शुरुआत मुज़्य अतिथि, इफको पारादीप के यूनिट हेड श्री अनिरुद्ध विक्रम सिंह द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ हुई, जिसके बाद एक शानदार परेड हुई। सभा को संबोधित करते हुए, श्री सिंह ने उन अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि दी, जिनके बलिदानों ने देश की संप्रभुता और स्वतंत्रता को सुरक्षित किया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि देश की अखंडता, लोकतांत्रिक मूल्यों और एकता की रक्षा करना हर नागरिक की ज़िज़्मेदारी है, खासकर मौजूदा वैश्विक अनिश्चितताओं और बदलते भू-राजनीतिक हालात के बीच।

किसान समुदाय के प्रति इफको की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालते हुए, श्री सिंह ने कहा कि यह संगठन अपनी सहकारी भावना को बनाए रखते हुए देश भर के किसानों की सेवा करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि ढ्ढस्नस्नष्टह्ल केवल उर्वरक बनाने वाला संगठन नहीं है, बल्कि लाखों भारतीय किसानों की समृद्धि, देश की खाद्य सुरक्षा और राष्ट्रीय विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है।

माननीय चेयरमैन श्री दिलीप संघानी जी और मैनेजिंग डायरेज़्टर श्री के. जे. पटेल जी के विज़न का ज़िक्र करते हुए, श्री सिंह ने कहा कि इफको तकनीकी उत्कृष्टता, इनोवेशन, डिजिटल बदलाव, ऊर्जा दक्षता, पर्यावरण संरक्षण, सुरक्षा और किसान-केंद्रित सेवाओं के माध्यम से एक अग्रणी वैश्विक सहकारी संस्था के रूप में अपनी स्थिति को और मज़बूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने सभी कर्मचारियों से इस विज़न को मिलकर हकीकत में बदलने का आह्वान किया।

श्री सिंह ने कच्चे माल की उपलज़्धता और आपूर्ति को लेकर हाल के महीनों में संगठन के सामने आई चुनौतियों का भी ज़िक्र किया। उन्होंने इन चुनौतियों के बावजूद यूनिट के सुचारू कामकाज को सुनिश्चित करने में प्रोडज़्शन, परचेज़, लॉजिस्टिज़्स, प्लानिंग, मेंटेनेंस और अन्य टीमों द्वारा दिखाए गए बेहतरीन तालमेल, दूरदर्शिता और प्रतिबद्धता की सराहना की। इफको की पर्यावरण और ऊर्जा-दक्षता से जुड़ी पहलों पर बात करते हुए, श्री सिंह ने पारादीप यूनिट में लागू किए जा रहे दो अहम प्रोजेज़्ट्स का ज़िक्र किया। ये प्रोजेज़्ट्स 2070 तक %नेट ज़ीरो एमिशन% (शुद्ध शून्य उत्सर्जन) हासिल करने के देश के संकल्प के अनुरूप हैं। उज़्मीद है कि इन पहलों से ऊर्जा-दक्षता बढ़ेगी, जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम होगी और कार्बन उत्सर्जन को घटाने में मदद मिलेगी।

उन्होंने समाज के वंचित वर्गों, खासकर प्लांट के आस-पास रहने वाले समुदायों की भलाई के लिए %ज्योति लेडीज़ ज़्लब% के लगातार योगदान की भी तारीफ़ की।

इस समारोह में ढ्ढस्नस्नष्टह्ल के वरिष्ठ अधिकारियों और प्रमुख पदाधिकारियों ने हिस्सा लिया, जिनमें ढ्ढस्नस्नष्टह्ल ऑफिसर्स एसोसिएशन के प्रेसिडेंट श्री सुशांत कुमार जेना; इफको ऑफिसर्स एसोसिएशन के जनरल सेक्रेटरी श्री सत्यजीत खुंटिया; ढ्ढस्नस्नष्टह्ल एज़्प्लॉईज़ यूनियन के प्रेसिडेंट श्री प्रशांत कुमार स्वाइन; और इफको एज़्प्लॉईज़ यूनियन के जनरल सेक्रेटरी श्री तृप्ति रंजन पुहान शामिल थे।

कार्यक्रम का समापन श्री विजय कुमार परिडा (हेड, क्क्र) के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। उन्होंने सभी गणमान्य व्यक्तियों, कर्मचारियों, एसोसिएशन और यूनियन के प्रतिनिधियों, टाउनशिप के निवासियों, छात्रों और अन्य लोगों का शुक्रिया अदा किया, जिन्होंने स्वतंत्रता दिवस समारोह को शानदार ढंग से सफल बनाने में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

ओडिशा बाढ़ : 95 हजार से अधिक लोग सुरक्षित निकाले गए, 6 जिलों में स्थिति गंभीर

भुवनेश्वर १६/०८ (संवाददाता): ओडिशा के छह जिलों में शनिवार को बाढ़ की स्थिति गंभीर बनी रही। पिछले 24 घंटों में भारी बारिश के कारण राज्य सरकार ने निचले इलाकों से 95 हजार से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। राज्य आपातकालीन संचालन केंद्र (एसईओसी) के अनुसार बाढ़ से बालासोर, भद्रक, जाजपुर, मयूरभंज, ज़्योंझर और केंद्रपाड़ा जिलों के 52 प्रखंडों के 503 गांवों में लगभग 2.70 लाख लोग प्रभावित हुए हैं। इन जिलों में बैतरणी, ब्राह्मणी, जालका और बुधबलंगा नदियों तथा उनकी सहायक नदियों का जलस्तर बढ़ने से जनजीवन प्रभावित हुआ है। आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा जारी एक बयान में कहा गया कि उज़्ारी ओडिशा में बारिश जारी रहने के बीच राज्य प्रशासन ने बचाव और राहत कार्यों को तेज कर दिया है। आपदा प्रबंधन मंत्री सुरेश पुजारी ने बताया कि कुल 95,206 लोगों को 226 राहत शिविरों में पहुंचाया गया है, जहां पका हुआ भोजन, सुरक्षित पेयजल, स्वच्छता, रोशनी और चिकित्सा सुविधा की व्यवस्था की गई है। पुजारी ने कहा कि संबंधित जिला आपातकालीन संचालन केंद्रों (डीईओसी) के साथ समन्वय करके स्थिति पर करीबी नजर रखी जा रही है। उन्होंने कहा कि मयूरभंज, बालासोर, भद्रक, जाजपुर और ज़्योंझर जिलों पर विशेष निगरानी रखी जा रही है। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने प्रभावित क्षेत्रों में बचाव, राहत और आपातकालीन कार्यों के लिए 118 प्रतिक्रिया दल तैनात किए हैं। मंत्री ने कहा कि सभी नदियों के जलस्तर की लगातार निगरानी की जा रही है और संवेदनशील स्थानों पर एहतियाती कदम उठाए जा रहे हैं। इस बीच, मौसम विभाग ने शाम के बुलेटिन में कहा कि दक्षिण-पूर्वी झारखंड और आसपास के क्षेत्रों के ऊपर बना निज़्न दबाव का क्षेत्र अब कमजोर पड़ गया है। इसमें कहा गया है कि हालांकि, अगले 48 घंटों के दौरान उज़्ार बंगाल की खाड़ी के ऊपर निज़्न दबाव का एक और क्षेत्र बनने का अनुमान है।

एमसीएल में देशभक्ति के उत्साह के साथ मनाया गया 80वां स्वतंत्रता दिवस

संबलपुर १६/०८ (संवाददाता): महानदी कोल फील्ड्स लिमिटेड (एमसील) ने 80वां स्वतंत्रता दिवस देशभक्ति के उत्साह और गर्व के साथ मनाया। श्री उदय अनंत काओले, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक ने कंपनी मुज़्यालय में आयोजित मुज़्य समारोह में तिरंगा फहराया और मार्चिंग टुकड़ियों की सलामी ली। श्री काओले ने अपने संबोधन में स्वतंत्रता सेनानियों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और देश की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने में एमसीएल की भूमिका और विभिन्न सीएसआर व कल्याणकारी पहलों के माध्यम से सामुदायिक विकास के प्रति निरंतर प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने पिछले तीन विज़्ाीय वर्षों में लगातार 200 मिलियन टन कोयला उत्पादन की हैट्रिक हासिल करने के लिए टीम एमसीएल के कार्य समर्पण की सराहना की।

इस अवसर पर सीएमडी श्री काओले ने सभी हितधारकों और %एमसीएल परिवार% को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दीं। समारोह में निदेशक (तकनीकी) श्री संजय कुमार झा, मुज़्य सतर्कता अधिकारी श्री संबीत सौरव नायक, पूर्व निदेशक गण, वरिष्ठ अधिकारी, जागृति महिला मंडल की उपाध्यक्ष व सदस्य, कर्मचारी, उनके परिजन और कंपनी के अन्य हितधारक उपस्थित रहे। स्कूली बच्चों द्वारा प्रस्तुत नृत्य प्रस्तुतियों ने समारोह में देशभक्ति के रंग भर दिए। सीएमडी एवं समस्त गणमान्य ने बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए डीएवी पज़्लिक स्कूल, बुर्ला के 10वीं और 12वीं कक्षा के मेधावी छात्रों को सज़्मानित किया। इसके साथ ही सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग टुकड़ियों और सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को भी पुरस्कृत किया गया।

इसी प्रकार, एमसीएल के सभी परिचालन क्षेत्रों में स्वतंत्रता दिवस समारोह आयोजित किए गए।

केन्दुझार में जंगली हाथी ने युवक को कुचलकर मार डाला

भुवनेश्वर १६/०८ (संवाददाता): ज़्योंझर ज़िले के घटागांव पुलिस थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले डलंगापानी गांव में एक जंगली हाथी ने कुचलकर एक युवक की जान ले ली।मृतक की पहचान उसी गांव के रहने वाले मदन नायक के तौर पर हुई है। खबरों के अनुसार, कल शाम हाथियों का एक झुंड गांव में घुस आया और काफी अफरातफरी मचा दी। जब स्थानीय लोग हाथियों को भगाने की कोशिश कर रहे थे, तभी एक जंगली हाथी ने नायक पर हमला कर दिया। परिवार के लोग और ग्रामीण घायल नायक को इलाज के लिए घटागांव कज़्युनिटी हेल्थ सेंटर (ष्ट॥ष्ट) ले गए, जहां डॉज़्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने पर घटागांव पुलिस मौके पर पहुंची, हालात का जायजा लिया और मामले की जांच शुरू की।

केंद्रपाड़ा में आवासीय स्कूल में घुसा बाढ़ का पानी, 400 छात्र फंसे

केंद्रपाड़ा १६/०८ (संवाददाता): ओडिशा के केंद्रपाड़ा जिले में सरकारी आवासीय स्कूल परिसर में रविवार को बाढ़ का पानी घुस जाने से करीब 400 छात्र फंस गए, जिनमें 150 छात्राएं भी शामिल हैं। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। यह स्कूल पट्टामुंडई प्रखंड के पेंथापाला ग्राम पंचायत के अंतर्गत कुलासाही गांव में स्थित है और निचले इलाके में बना हुआ है।

अधिकारियों के अनुसार, ब्राह्मणी नदी का जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर बहने के कारण जिले के कई निचले इलाकों में फिर से बाढ़ की स्थिति पैदा हो गई है। जिले में करीब एक पखवाड़े पहले भी बाढ़ आई थी। इस दो मंजिला स्कूल में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के करीब 400 छात्र रहते हैं, जिनमें 150 छात्राएं हैं।

पट्टामुंडई की प्रखंड विकास अधिकारी (बीडीओ) शीतल अग्रवाल ने बताया, चूंकि छात्राओं को भूतल पर रखा गया है, इसलिए स्थानीय प्रशासन ने उन्हें औल स्थित एक दूसरे आवासीय विद्यालय में पहुंचाना शुरू कर दिया है। इसके लिए मोटर चालित नौकाओं का इस्तेमाल किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पहली मंजिल पर रह रहे लगभग 250 लड़के तुलनात्मक रूप से सुरक्षित हैं और स्थिति पर कड़ी नजर रखी जा रही है। बीडीओ ने कहा, अगर स्थिति और खराब होती है तो उन्हें भी सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया जाएगा। प्रशासन जलस्तर में हो रही बढ़ोतरी पर लगातार नजर बनाए हुए है और बचाव एवं निकासी की सभी व्यवस्थाएं तैयार रखी गई हैं।

राउरकेला इस्पात संयंत्र ने देशभक्ति के जोश के साथ भारत का 80वां स्वतंत्रता दिवस मनाया

राउरकेला १६/०८ (संवाददाता): 15 अगस्त को इस्पात स्टेडियम में देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव का माहौल देखने को मिला, जब सेल, राउरकेला स्टील प्लांट (आरएसपी) ने भारत का 80वां स्वतंत्रता दिवस बड़े उत्साह और देशभक्ति के जोश के साथ मनाया। दिन के कार्यक्रमों की शुरुआत राष्ट्रगीत के गायन से हुई, जिसके बाद राउरकेला इस्पात संयंत्र के निदेशक प्रभारी, श्री आलोक वर्मा ने तिरंगा फहराया और राष्ट्रगान गाया गया। इसके बाद उन्होंने 61 टुकड़ियों वाले शानदार मार्च पास्ट का निरीक्षण किया और सलामी ली; इन टुकड़ियों की सटीक चालें ज्ञान ज्योति पज़्लिक स्कूल बैंड की जोशीली धुनों पर हो रही थीं। मंच पर उनके साथ डीआईजी (सीआईएसएफ) श्री विष्णु स्वरूप भी मौजूद थे। दिल्ली पज़्लिक स्कूल के छात्रों ने सभी के साथ मिलकर पूरे जोश के साथ राष्ट्रगान गाया। 80वें स्वतंत्रता दिवस के खास मौके पर सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हुए श्री वर्मा ने कहा, 卐जब भारत ने रोशनी और आज़ादी की ओर कदम बढ़ाया, तो उसे अपना भविष्य बनाने के लिए एक मज़बूत नींव की ज़रूरत थी। राउरकेला इस्पात संयंत्र उसी महान राष्ट्रीय सपने से पैदा हुआ था। हम सिर्फ़ एक मैन्युफैक्चरिंग यूनिट नहीं हैं; हम आत्मनिर्भर भारत का एक प्रतीक हैं।卐 उन्होंने इस्पात संयंत्र के बदलाव लाने वाले विज़न के बारे में बताया और ?30,000 करोड़ के बड़े ग्रीनफ़ील्ड आधुनिकीकरण और विस्तार प्रोजेज़्ट पर ज़ोर दिया। ग्लोबल मार्केट में उतार-चढ़ाव, कच्चे माल की बढ़ती लागत और कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच, उन्होंने कहा कि प्लांट ऊर्जा और पानी की खपत कम करके और इंडस्ट्री 4.0, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और शॉप-ज़्लोर डिजिटलाइज़ेशन को अपनाकर सस्टेनेबिलिटी की ओर तेज़ी से बढ़ रहा है। भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र और देवी सुभद्रा की पवित्र रथ यात्रा से प्रेरणा लेते हुए, उन्होंने सभी से एक टीम बनकर प्लांट को आगे ले जाने का आग्रह किया, ठीक वैसे ही जैसे लाखों भक्त मिलकर भव्य रथों को खींचते हैं। आरएसपी परिवार का उत्साह बढ़ाते हुए, निदेशक प्रभारी ने सभी से कहा कि वे %ज़्या संभव है% के बारे में अपनी सोच बदलें, ज़ीरो हार्म (कोई नुकसान नहीं), ज़ीरो वेस्ट (कोई बर्बादी नहीं) और रिकॉर्ड तोड़ने वाली क्षमता जैसे मुश्किल लक्ष्यों को हासिल करने की कोशिश करें और एक मज़बूत आरएसपी और आत्मनिर्भर भारत बनाने का संकल्प लें। इस मौके पर आयोजित अवॉर्ड सेरेमनी में, श्री वर्मा ने सीआईएसएफ कर्मियों को उनकी बेहतरीन सेवा के लिए सज़्मानित किया। उन्होंने आरएसपी फायर ब्रिगेड टीम को एक खास ट्रॉफी भी दी। इसके बाद उन्होंने %मोटिवेशनल अवॉर्ड्स स्कीम% के विजेताओं को अवॉर्ड दिए, यह स्कीम खुद डीआईसी की सोच का नतीजा है। उन्होंने सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाली टुकड़ियों को भी इनाम दिए। इस कार्यक्रम में दीपिका महिला संघति (डीएमएस), की अध्यक्षा श्रीमती नम्रता वर्मा, कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन),श्री तरुण मिश्र, कार्यपालक निदेशक (खान विकास एवं सीएमएलओ), श्री बी के गिरि, कार्यपालक निदेशक (वर्क्स), श्री विश्व रंजन पलाई, कार्यपालक निदेशक (सामग्री प्रबंधन), श्री अनिल कुमार, कार्यपालक निदेशक (खान, ओजीओएम, सीएमएलओ), श्री एम. पी. सिंह, कार्यपालक निदेशक (परियोजनाएं), श्री सुदीप पाल चौधरी, मुज़्य महाप्रबंधक प्रभारी (विज़् एवं लेखा), एवं कार्यपालक निदेशक विज़् एवं लेखा का अतिरिक्त प्रभार संभाल रहे श्री राजेश दासगुप्ता, मुज़्य चिकित्सा अधिकारी प्रभारी (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं), डॉ. जे के आचार्य, डीएमएस की सभी उपाध्यक्षाएँ, श्रीमती पार्वती मिश्र, श्रीमती स्मिता गिरी, डॉ. (श्रीमती) प्रतिज्ञा पलाई, श्रीमती रीता रानी, श्रीमती वंदना सिंह, श्रीमती नबनिता पालचौधरी और संयंत्र के कई अन्य वरिष्ठ अधिकारी, ट्रेड यूनियन और एग्जीज़्यूटिव एसोसिएशन के प्रतिनिधि और बड़ी संज़्या में दर्शक मौजूद थे। सिलिकॉन स्टील मिल के श्री अनिल कुमार मल्लिक और सुश्री आकांक्षा मल्लिक ने कार्यक्रम का संचालन किया।

मिनी स्टेडियम, सेज़्टर - 22 में आयोजित एक सज़्मान समारोह में, निदेशक प्रभारी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया, परेड का निरीक्षण किया और 33 टकड़ियों द्वारा एक रंगीन मार्च पर सलामी ली। यहां भी उन्होंने परेड की सर्वश्रेष्ठ टुकड़ियों को पुरस्कार प्रदान किए। श्री गांधी नोडल उचा विद्यालय को 10000/- रुपये का नक़द पुरस्कार देने वाला डीआईसी विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। एसएसआरवीएम आईईएमएस, सेज़्टर-22 ने परेड में बैंड को प्रस्तुत किया।

दीपिका महिला जागृति संस्थान, सेज़्टर-2 में आयोजित एक समारोह में श्रीमती नम्रता वर्मा ने दीपिका महिला संघति के उपाध्यक्षों, सचिव, शासी निकाय के सदस्यों और अन्य स्वयंसेवकों की उपस्थिति में झंडा फहराया।